

2107

Pugh

huc Surp

84-2

4-73

Pugh

1899

**БЕРЕГИТЕ КНИГУ!**

**ОНА СЛУЖИТ НЕ ОДНОМУ, А МНОГИМ.**

Возвращайте книгу в  
срок, чтобы и другие  
могли воспользоваться  
ею.

2011

3/12  
2014  
1252<sup>12</sup>/<sub>15</sub>

1m

84-2  
4-73  
uy

89

70



# ԹԱԳԻ ՀԱՄԱՐ

4-78



(Pour la Couronne)

Ողբերգ. 5 գործ.

ՖԻՍ.ՆՍՈՒԱ. ԿՈՊՊԵՏԻ

Թարգմանեց Ֆրանսերէնից

ՄԿԲՏԻՉ ՄԱՆՈՒՉԱՐ.

Центральная слоб-ка им. Ленина

100. 1000  
ИНВЕНТАРИЗАЦИЯ 1936 г.

№

604

504

Дозволено Цензурою. Тифлисъ, 24-го Августа 1898 г.



416  
41

Настоящая пѣса, подъ загл. „Изъ-за короны“  
разрѣшена Г. Главнначальствующимъ для представ-  
ленія на сценахъ края. Октября 8 дня 1898 г.  
г. Тифлисъ.

*Предсѣдатель Комитета М. Гаккель*

*Секретарь Н. Меликъ-Нубаровъ*

## ԳՈՐԾՈՂ ԱՆՁԻՆՔ.

|                                    |                                                            |
|------------------------------------|------------------------------------------------------------|
| Ստեփան Եպիսկոպոս . . . . .         | Թագաւոր Բաղկանների                                         |
| Իշխան Միքայէլ Բրանկովիւր . . . . . |                                                            |
| " Կոստանդին Բրանկովիւր . . . . .   | Իշխան Միքայէլի որդին                                       |
| Իբրահիմ Էֆենդի . . . . .           | Սուլթան Մուհամմէդ II-դի                                    |
|                                    | լրտեսը, որ Թափառական երգիչ է ձեւա-<br>նում Բեկի մականունով |
| Ուրօշ . . . . .                    | Հին գինուոր                                                |
| Լազար . . . . .                    | Զինուոր                                                    |
| Տաճիկ կալանաւոր . . . . .          |                                                            |
| Պահապան . . . . .                  |                                                            |
| Հովիւ . . . . .                    |                                                            |
| Սպայ . . . . .                     |                                                            |
| Բազիլիդ . . . . .                  | Իշխան Միքայէլի ամուսինը                                    |
| Միլիցա . . . . .                   |                                                            |
| Աննա . . . . .                     | Ուրօշի դուստրը                                             |
| Սօֆիա . . . . .                    | Երգչուհի                                                   |
| Ալէքսիս . . . . .                  | Մանկկաւիկ                                                  |

Անցքը պատահում է Բաղկաններում XV-դ դարի վերջը:

## ԱՌԱՋԻՆ ԳՈՐԾՈՂՈՒԹԻՒՆ

Տեսարանը ներկայացնում է մի ամրոցի հրապարակ Բաղկաններում: Խորքում գլխաւոր մուսֆի դարպասը, աջ ու ձախ պարիսպներ: Երկրորդ մակարդակում դեպ աջ գլխաւոր ապարանքը փոքրիկ դռնով: Պարիսպների ժանիֆների միջից երեւում է լեռնաշղթայ, իսկ իսկ զանգեր ժանիֆներից կախ:

## ՏԵՍԱՐԱՆ ԱՌԱՋԻՆ

Լազար, Ուրօշ, Բեկիօ: Վարագոյրը բացուելիս, Լազարը ցոյց է տալիս Բեկիօին լեռները: Բեկիօն զրնգուի հագուստով է, ուսովը մի տալիս գցած: Աշխատն թելներով. Ուրօշը նստած է մի նստարանի վրայ:

## Լ Ա Ձ Ա Ր:

(Ցոյց տալով դեպ ձախ): Այո՛, Երգիչ, այստեղից կարող ես դու տեսնել ամբողջ Երկիրը: Տեսնում ես դէպ հիւսիս այդ հասած ցորենի եւ հաճարի արտերը, այդ գեղեցիկ արօտները, սիրուն մարգագետինները, այդ անհուն տարածութիւնը, որքան կտրում է աչքդ—քրիստոնէի երկիր է—Բուլղարական հովիտը: Երբ երկինքը պարզ է, եւ պայծառ արեւը հորիզոնից բարձրացել, այնտեղ հեռուն ո՞ր շողում է մի հրաշալի անկիւն—մեր մայրաքաղաք

Վեդգիների տաճարը: Այնտեղ Դանուբը տարածվում է  
կապարի գոյնով, կարծես զեղին գորգի վրայ ընկած մի  
սուսեր, երկու մաս սնելով հայրենի երկիրը:

β    ½    ⅓    ¼    0:

(Յոյց է տալիս դեպ աջ): Իսկ... դեպ աջին կողմը...  
հարա՞ւ:

1. 2. 3. 4. 5.

Ահ, այն տաճիկներինն է... որոնց յաղթութիւնները այս տաճներովու տարի է այլեւս չեն անցնում մեր պարիսպներից, չնորհիւ անատիկ Բաղաններին... Գուցէ եւ մեր չնորհիւ (ցոյց տալով աջ ու ձախ), Այս կողմը—կիսալուսինն է, այս կողմը—խաչը:

ᠪ ᠡ ᠭ ᠤ ᠐:

(Դիտեցաւ ղէպի ընկերը): Այո՛, հանելի է գոռոզ  
Բալկանեան ալեւոր չլթան: Կասեա թէ նրանք մրկա-  
յոյզ ուկեանի լեռնացած ալիքներ են, իրար վրայ զիջած:

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 84

Գուցէ՛ եւ տաճիկը վազուց ընկնէր այդ Բալկան-  
ները, եթէ չը լինէր այն քաջ առաջնորդը, որ տամաներկու-  
տարի անդուռ հսկում է այս ամրոցում: Զարհուրելի է  
մտածել անդամ, որ մենք բոլորս էլ իսպառ կոչնչա-  
նայինք, եթէ չը լինէր մեր զիւցազն իշխանը—Միքայէլ  
Բրանկովիրը:

β    ٥    ٦    ٧    ٨:

Թափառական երգիչս, որ այժմ նրա պատահական  
հիւրն եմ, կ'ուզենայի նրա մեծ գործերը երգել: Դու  
պատմիր ինձ, բարեկամ, իսկ ես քո պատմածները յան-

դերի կը լերածեմ եւ կտամ քնարիս լարերին՝ գիւցազն  
Միջայեւի քաջ արարքը:

1. 5. 2. 5. 1:

Արժէ, եւ մենք քեզնից չառ չորհրակալ կը լի-  
նենք: Դէ՛հ լսի՛ր ուրիմա՛ն Հաղիւ Սուլթան Մուհամմէզը  
նուաճեց Բուզանդիան, կիսալուսինը կարծեց թէ ամբողջ  
այշխարհը իրան է տուած: Ընկել էր Հունիազը, Պանդեր-  
բէզը, Ամօթալի գերի էր Յոյնը, Մաճաղը, Սեբրը, Էպի-  
րացին: Պօնտոսի ամբողջ աղգարնակութիւնը եւ թէ Սեւ  
Լեռնցիկն կամ գերի էին ընկել կամ սրի անցել: Իսկ գո-  
ռոզ տաճիկը, որ տիրել էր բոլորին, իր բարբարոսութիւն-  
ների չափը անցկացրեց, նուաճուած ամեն մի երկիր հե-  
ծում էր որեւէ գաղան փաշայի ձեռքում: Բուզապէտից  
մինչ Վառնա մի ահագին գերեզմանի էր նման, աւերակ-  
ների մի կոյտ ներկայացնում: Իւրաքանչիւր խրճիթի,  
ամրոցի դռնից իր տիրոջ անշունչ դիակն էր կախ ընկած:  
Իշխանները հօից տաճկին հարկ էին վճարում. իսկ տա-  
ճիկ ձիաւորները, մի մի քսակ կապած թամբի հետեւից  
լցնում էին իրանց սպանած քրիստոնեանների կտրած ա-  
կանջներով, ի նշան իրանց զործած գազանութիւնների:  
Ո՛հ, այսպիսի սարսափելի օրեր բնաւ չէր տեսնուած:  
Ճանապարհորդներն էլ չարագուշակ լուրեր էին պատմում:  
Օրինակ, ասում էին իբր թէ արիւն է կաթում մեծ ճա-  
նապարհների վրայ եղած մատուռների խաչելութիւններից,  
թէ տեսել են ինչպէս գոռնատուել է Տիրամօր պատկերը  
Պրապայում, եւ շատ այսպիսի լուրեր... Օսմանլիի յաղ-  
թութիւններից Քրիստոսի հօտը ահաբեկուած՝ փախստա-  
կան էր դառնում՝ բռնութիւնից խոյս տալով:

Ո Ւ Ր Օ Շ:

Այո՛, այդ բոլորը ճիշտ է: Ես, ծերուկս, աչքովս տեսել եմ այդ բոլորը: Ո՛հ, այն ի՞նչ անխճեալ օրեր էին...

Լ Ա Ձ Ա Ր:

Ահա այդպիսի մի ժամանակ, վրիժու սաստիկ դայրոյթով լցուած, ինչպէս լաւ սլաւօն, Բալկանների հարազատ զաւակ, որին ատելի է օտարի լուծը, խաչին պաշտպան հանդիսացաւ Միքայէլ Բրանկօմիրը՝ Նորա խորհրդով, հանդուցեալ արքան վերագարձրեց սուլթանին էմիրի տիտղոսը, ընդհատեց հարկ վճարել եւ սիրտ առած՝ պատերազմ հրատարակեց: Պատերազմի հրաւէրը ամբողջ ժողովուրդը Միքայէլի շուրջը ժողովեց: Նրա անունը լսելով, իւրաքանչիւրը կռուի դաշտն էր շտապում՝ իր ժանգոտած սուրը մաքրելով: Սուրբ պատկերի առաջ ծնկաչոք, մի սիրտ մի հոգի եղած, միախմբուած ամբողջ ծնկաչոք, մի սիրտ մի հոգի եղած, միախմբուած ամբողջ զօրքը երգուեց քաջին հաւատարիմ լինել, նրան առաջնորդ ընտրելով: Ծերունի սուլթանը, նախատեսելով վրիժու դատաստանի սարսափելի տանջանքները, շտապեց մեր գէտ ուղարկել իր փաշաներից եւ բէգերից ամենաբարբարոսներին: Գրոհ տալով դէպ մեր անառիկ լեռները, ամենուրեք տաճիկները պատրաստ դտան Միքայէլին իր քաջերով: Այդ լեռներում թափուած արեան հոսանքից հեռաւոր ջրվէժների փրփուրը կարմրեց: Գիշերն ի բուն, հանգ կռուի աղմուկն էր միայն լսում: Մենք փորսողելով էինք մօտենում թշնամուն, որովհետեւ ամեն մի քայլով էինք լատիսում դարան էր գտանվում: Մէկ անգամ յիշում եմ, ինչպէս մի մեծ ժայռի զանգուածից անցնելիս, միայն ես

մի ամբողջ խումբ տաճիկ ջարդեցի, նոյն իսկ նրանց միջոց չը տալով Ալլահ կանչելու... Կռիւր այդ կերպ տեսեց այս ալեւոր լեռներում ամբողջ տաններկու տարի: Չէնքերի շաշխնից, թնդանօթների որոտից դիւրացող այս լեռները բոցավառուել, դարբնոցի հնոցի տեսք էին ստացել: Իսկ տաճիկների յարձակումները, մրրկից բռնուած ալիքների պէս, դալիս զարկվում էին Բալկաններին, ինչպէս ծովաժայռի, եւ ունայն ետ մղվում: Այժմ նրանց յարձակումները սակաւ են... Թէեւ Օթարգիւլ փաշան մինչ օրս էլ բանակ է ձգել հովտում, սակայն ասիական այդ վազըր ուժասպառ եղած՝ այնտեղ հանգիստ է առնում: Նրա թոխչը բալկանեան արծուի բոյնին չի հասնում, իսկ սուր մագիլները՝ դիպչելով Բալկանների որձաքարերին՝ այնպէս մաշուել, արիւնաթաթախ են եղել, որ այժմ այս ոսկեհուռ արտերում թաւալուելով՝ նա ողբում է իր հերձոտած մագիլները...

Բ Է Ն Կ Օ:

Այո՛, բարեկամ, իբաւունք ունիս, մեծ է Միքայէլը: Այսուհետեւ իմ երգերում նորա անունը հաւասար տեղ կը տամ Դեւ Վլասի եւ Յովհաննէս Հունիադի շարքում: Նրա քաջագործութիւնները ես կերպեմ իմ ալբանական ոսկելար քնարով... Եւ այդ երգերի ձայնը արձագանք կը տայ երկրից երկիր... Սակայն, առա խնդրեմ, այդ քաջ հերոսը մի՞թէ ապրում է այստեղ առանձնացած, ձեղ հետ միայնակ, այս մոռյլ ամրոցում:

Լ Ա Ձ Ա Ր:

Ոչ, նրա հետ այստեղ ապրում են կլինը եւ որդին, Կոստանդինը: Երբ Միքայէլը, Աստուծոյ օգնութեամբ,

սկսեց իր պանծալի գործը, Կոստանդինը տակաւին մա-  
նուկ՝ հօր ղինակիրն էր: Հօր տուած օրինակը ապարդիւն  
չանցաւ: Այժմ Կոստանդինը հասակը առած մի քաջ  
տղամարդ է, հօրից ոչ պակաս: Հայրենի երկիրը նրանց  
երկուսին էլ պաշտում է հաւասար—թէ այդ նոր կռած  
սրին եւ թէ հին սուսերին:

Բ Է Ն Կ Օ:

Ես կուզենայի այդ քաջերի մասին բոլորը խմանալ...  
խակ մայր՝ը...

Լ Ա Զ Ա Բ:

Աւա՛ղ, վա՛ռց է նա մեռած: Հանգուցեալ արքան,  
Աստուած նրա հոգին լուսաւորէ, Միքայէլին երկրորդ  
անգամ յորդորեց առնել պայազատ Բաղիլիդին... որ  
ասում են թէ ծագումով բիւզանդական կայսրներից է...

Բ Է Ն Կ Օ:

Գեղեցի՞կ է...

Լ Ա Զ Ա Բ:

Սրբին խելքից կ'հանէ:

Բ Է Ն Կ Օ:

Իսկ իշխանը սիրում է նրան:

Ո Ի Բ Օ Շ:

(Նստած Տեղիցը, խիստ): Այո՛, մինչեւ անգամ չա-  
փից դուրս... մի ղինուորի համար...

Լ Ա Զ Ա Բ:

Այնուամենայնիւ, հանգուցեալ արքան շատ ար-  
դարացի մի այդպիսի ընծայ տուեց իշխանին: Պատերազ-  
մի յաղթական զրօշակը զարդարում են վարդով:

Բ Է Ն Կ Օ:

Անհամբեր սպասում եմ այդ հաղուագիւտ գեղեց-  
կունուն տեսնել. երեւի նա առիդ սիրում է լսել:  
Բայց ներեցէք հարցնել. թագաւորը, որի մասին այդ-  
քան յաճախ կրկնում էք, ո՞ր է մեռել...

Լ Ա Զ Ա Բ:

Անցեալ ամիս:

Բ Է Ն Կ Օ:

Որդին է անշուշտ թագաւորում:

Ո Ի Բ Օ Շ:

(Տեղից վեր կենարով): Ո՛չ, մեղանում թագը ժա-  
ռանդական չէ:

(Բեկնիօն զարմանում է): Այո՛, թագաւորի թաղու-  
մից յետոյ, սգից էլ մի ամիս անց, Վեղդինում, մայր տա-  
ճարի հրապարակում գումարվում է ծերակոյտը Ամե-  
նայայտնի իշխաններից քսան հոգի ձիաւորուած, հասա-  
կով բոլորից ծերերը, ըստ նախնի սովորութեան, կազ-  
մում են ղինուորական ծերակոյտը: Հեռուից ամեն մարդ  
ճանաչում է նրանց սաղաւարտների արծաթազօծ, ցցու-  
ած փնջերից: Հիանալի՛ է այդ տեսարանը: Հէնց ձիա-

ների վրայ էլ նստած՝ ընտրում են նրանք թագաւորացուն: Երբ յայտնուում է, ով է ընտրուած, նրանք սկսում են իրանց սրերը խաղացնելով մեծարել նրան: Յետոյ մեծ շքով թագադրութեան հանդէսն է կատարվում:

Լ Ա Զ Ա Ր:

Երէկ պէտք է Վեզդինում գումարուէր ծերակոյտը: Մենք չուտով կիմանանք ընտրութեան հետեւանքը:

Բ Է Ն Կ Օ:

Անկասկած կ'ընտրեն Միքայէլ Բրանկօմիրին. ո՞վ է նորանից արժանաւոր երկրի իշխանութեան:

Լ Ա Զ Ա Ր:

Այո՛, եթէ արդար խղճմտանքով դատելու լինենք, նա է ամենից արժանի:

Ո Ի Ր Օ Շ:

Չէ՛, տղերք, դուք շատ շուտ էք ամեն ինչ վճռում առանց հասկանալու: Ուղիղ է, որ Միքայէլը մեծ զօրավար է եւ մեծ պատուի արժանի: Սակայն նա շատ կը սխալուի, եթէ թագի մասին մտքովն անգամ անցկացնի: Նորան արդէն մեծարել են իրան վայել թէ փառքով եւ թէ պատուով: Այդ արդէն բաւական է: Իսկ ժողովրդի ծերերը եւ թէ իշխանները—ամբողջ ազգի հետ, այն կարծիքին են, որ այդ զինուորը պէտք է մնայ սահմանազրկ խում թշնամու հանդէպ, մայրենի երկիրը պաշտպանելու: Բացի այդ, օտարական, իմացիր, որ մեզանում թագը ձեռք բերելու համար ամենալաւ միջոցն է...

Բ Է Ն Կ Օ:

Ո՞րք:

Ո Ի Ր Օ Շ:

Բնաւ չը մտածել թագի մասին:

Բ Է Ն Կ Օ:

Իսկ ո՞ւմ կ'ընտրեն, ի՞նչ էք կարծում:

Ո Ի Ր Օ Շ:

Ես համոզուած եմ, որ կ'ընտրեն Ստեփան եպիսկոպոսին:

Բ Է Ն Կ Օ:

Մի հոգեւորականի՞:

Ո Ի Ր Օ Շ:

Ասա՛ մի սրբի:

Լ Ա Զ Ա Ր:

Իսկը որ սուրբ մարդ:

Բ Է Ն Կ Օ:

Ինչո՞վ է նա արժանացել այդ վեհ կոչման:

Ո Ի Ր Օ Շ:

Ինչո՞վ: Բարեգործութեամբ, ամբողջ երեսուն տարիներ ամեն օր, ամեն ժամ, ամեն մի բոլորէ, թէ խօսքով եւ թէ կենդանի գործով: Բարիք գործելով թէ պաշտած

հայրենիքի եւ թէ նրա սուրբ ազատութեան համար: Եւ նորա ցանած բարի սերմերի տուած պտուղը հնձեց Միքայէլը: Ահա՛ թէ լինչով: Երբ Քրիստոսի հաւատը հաւածուած, երբ աթոռներէ եկեղիցիները մզկիթների էր փոխվում, ո՞վ մեզ յորդորեց խաչին հաւատարիմ մնալ— եպիսկոպոսը: Նա մեզ քարոզում էր անտառների խորքում: Դարեւոր կաղնու հաստ բոյնի խոռոչը սեղան դարձրած, նա պատարագ էր մատուցանում, աղօթում եւ մեզ աւետում իր քարոզներում մօտալուտ ապստամբութիւնը: Ո՛հ, որքա՛ն սուրբ էր այդ միջոցին նրա գէմքը: Ո՞վ կը մտածէր, որ մեր նախնիքը ազատ են եղել մի ժամանակ եւ ազատ ապրել: Եթէ սա չը լինէր, մինչ օրս էլ մենք տաճկին գերի կը լինէինք: Նոյն իսկ թագաւորը հարկ էր վճարում անհաւատներին: Քանի քանի անգամ եպիսկոպոսը ճանապարհին հանդիպելով թագաւորին, բլուսել է նրա ձիու սանձից պահել, իր հայեացքով կշտամբել նրան, ազդու խօսքերովը համոզել... Ուսումնարան յաճախելով ամեն օր, իր շուրջն էր հաւաքում փոքրերին, ուսուցանում նրանց հայրենի պատմութիւնը եւ թշնամուց վրէժ առնելու ոգին ներշնչում: Նրանց պատմում էր անցեալը եւ պահանջում վրէժ: Ազատութեան սրբազան պատերազմը նրա գործն է—այդ նա պատրաստեց, նա վարեց: Իսկ երբ մենք զրօշակը պարզած՝ կռուի դաշտը թուրս եկանք, նա էլ մեզ հետ էր, ուրախութիւնից իր ծերութեան հասակը մոռացած: Եթէ Միքայէլը յաղթեց, այդ որովհետեւ եպիսկոպոսը օրհնեց: Տաճարների թանկագին ակնեքը, ոսկին, արծաթը, սրբազան անօթները նա մեզ տուեց սուր, հրացան, թնդանօթի փոխելու, — ժողովրդին զինելու: Իսկ ինքը անձամբ խնամում էր պատերազմի դաշտում ընկած քաջերի որբերին

եւ մխիթարում նրանց այրիներին: Ո՛հ, մանաւանդ նա սուրբ է: Մի գիշեր, երբ առանձնացած աղօթում էր, մօտեցաւ մի բորոտ եւ ձեռք տալով նորա հանգերձին՝ բժըկուեց: Թռչուններն անգամ չէին քաշվում նրանից, եւ աղօթելիս՝ գալիս նստում էին նրա ձեռներին: Նա անպատճառ կ'ընտրուի, եւ եթէ միայն համաճայնէ, ոչ թէ փառքի, այլ պարտականութեանը խոնարհելով, կ'ընդունէ արքայական իշխանութիւնը: Եւ մենք հաւատացած ենք, ո՞վ սուրբ Քրիստոս, որ երբ կռուի դաշտում մենք մերձ 'ի մահ ընկած, տեսնենք այդ վեհ ճակատի լուսոյ պսակում արքայական թագը շողշողալիս, յաղթութիւնը կրտանենք...

Լ Ա Ձ Ա Ր:

Իսկ եթէ Բրանկօմիրը գերիշխանութեան մասին է մտածում, ա՛յն ժամանակ...

Ո Ի Ր Օ Շ:

Ազգի ցանկութեանը նա պէտքէ խոնարհի. նա կը զսպէ իրան:

Լ Ա Ձ Ա Ր:

Նա փառասէր է:

Ո Ի Ր Օ Շ:

Այո՛, բայց իր կնոջ համար:

Լ Ա Ձ Ա Ր:

Դու իրաւացի ես, Ուրօշ: Գեղեցիկ աչքերը երբեմն մարդու ընդունակ են դարձնում յանցանք գործելու: (Այդ

միջոցին աջ ապարանքից դուրս և գալիս մի մանկաւանի  
էն բարձրագոյն վարագոյրը պահում։)

Ո Ւ Ր Օ Շ:

Սո՛ւտ: Ահաւասիկ իշխանը իր մատաղահաս կնոջ  
հետ... Երգիչ, դու ցանկանում էիր տեսնել նրան...  
նայի՛ր...

Բ Է Ն Կ Օ:

(Խորին յարգանք և մատուցանում, ապա ասեղու-  
քեանք յի հայեացքը դարձնում դեպ զինուորները):  
Ահաւա՛տ չներ, ես բոլորը իմացայ, ինչ ինչ պէտք  
էր իմանալ...

#### ՏԵՍԱՐԱՆ ԵՐԿՐՈՐԴ

Նրանք, Միխայիլ Բրանկովիւր եւ Բագիդիդ: Աջա-  
կողմեան դռներից մտնում եւ իշխան Միխայիլը եւ Բա-  
գիդիդան՝ քեւ քեւի տուած: Միխայիլը 50-ի մօտ և, պա-  
ռնական զգեստով. գլխին մուրքե գլխարկ արծաթեայ  
ցնցուղով (aigrette), գոկից գեղեկ: Բագիդիդը կրփինի  
25 տարեկան, բիւզանդական ականակուռ հագուստով:  
Նրանց երեւոյուն պէս Բեկկօն չոքում և Միխայիլի  
տուայ):

Մ Ի Ք Ա Յ Է Է:

Այս ո՞վ է այս կերպ ծուներ իջնում իմ առաջ: Ո՞վ  
է այս օտարականը:

Բ Է Ն Կ Օ:

Մի ողորմելի երգիչ, որի ամբողջ հարստութիւնը  
այս տաւիղն է, իշխան, եւ որը ձեզնից աղերսում է հիւր-  
ընկալութիւն:

Բ Ա Զ Ի Լ Ի Դ:

Երգի՛չ: Այս քանի օր է ես շատ ախորժակ ունիմ  
երգի: Ո՞րանդից ես գալիս:

Բ Է Ն Կ Օ:

Մոլդաւիայից, ինչ անուանում են երգիչ Բէնկօ:

Բ Ա Զ Ի Լ Ի Դ:

Շա՛տ լա՛ւ: Այս երեկոյ դու կ'երգես քո նոր եղա-  
նակներից... Իսկ գիտե՞ս դու բումանական կամ վալլահ-  
ների այն լեզուները, որոնք մարդու վրայ ա՛ն են  
բերում վնասների կախարդական հէքիաթներից: Գի-  
տե՞ս, Միքայէլ, կանայքս մի տեսակ թուլութիւն ու-  
նենք դէպ այդ տեսակ հէքիաթները, որ թէ զուարճալի  
են եւ թէ զարուբելի... (Բեկկօյին): Ես կասեմ, որ քո  
մասին հողան (գլխով նշան և անում Բեկկօյին եւ երկու  
զինուորներին) Այժմ կարող էք գնալ (Լազարը, Ուրո-  
շը եւ Բեկկօն դուրս են գնում):



ՏԵՍԱՐԱՆ ԵՐՐՈՐԴ

Իշխան Միքայել եւ Բաղիլիդ: (Միխայելը մօտենալով դեպ ձախ պարսպին անհանգստութեամբ դիտում է հեռուն:)

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

Ե՞րբ կը գայ վերջապէս համբաւաբերը:

Բ Ա Ջ Ի Լ Ի Դ:

Վիդդինը հեռու է, ճանապարհներն էլ վատ:

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

(Սասիկ յուզուած): Թող տակի ձին սատկի, միայն թէ ինձ համար չուտ լուր բերի, տարակուսանքս փարատի, յատնի թէ ո՞վ է ընտրուած... Ա՛հ, եթէ այդ ե՛ս լինէի... Բայց անտեղի է յոյսս... Ժողովուրդը այն հոգեւորականի կողմն է, եւ, ինչ ասել, որ նրան էլ կ'ընտրեն... Սակայն ո՞վ գիտէ... Գուցէ... Երբեմն ամենաջնջին մի դէպք մի ակնթարթում ընդունակ է բոլորը փոխել... Ո՛հ, գրողը տանի, վերջապէս ե՞րբ կը գայ այդ համբաւաբերը:

Բ Ա Ջ Ի Լ Ի Դ:

Համբերութիւն, սիրելիս:

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

Ապերախտ եւ տխմար ժողովուրդ... Ամբողջ տասներկու տարի ես նրա համար արիւն թափեցի, տաճիկների դէմ կռիւ մղելով, որպէսզի նա իր արտը ապահով

մշակի, որ իր վաստակը հանդիստ վայելէ: Ի՞մ անյագ սուրը արծիւներին էր կերակուր մատակարարում. թըշնամու հանդէպ, կուրծքս դէմ արած, պատնէշի նման կանգնած էի այստեղ, եւ ո՞ւմ համար: Այդ ապերախտ ժողովուրդի—մշակ, արհեստաւոր, վաճառական թէ իշխան: Ամբողջ Բաղկանը դրդում էր իմ թըշնամիների ահեղ որոտից, որպէս զի նրանք իրանց աշխատանքի հալալ վաստակը վայելեն ուրախ, իրանց օջախում. իսկ ես պէտք է ծերանամ այստեղ, այս բիրտ ամրոցում, ուր պատերազմից միակ բաժինս մի քանի փաշաների գանգերն են բեւեռած: Այս հզօր բազուկը, որ անքան յաղթանակներ է տարել, կարող էր ազատել երկիրը, ծաղկեցնել ու հարստացնել: Եւ այնքան ծառայութիւններից յետոյ, մի՞թէ դեռ արժանի չեմ թափուր մնացած գահին... ու ինձ թողած, թագը կը դնեն որեւէ մի սուտ ճգնաւորի գլխին, մի կեղծաւորի, որ միայն գիտէ աղքատ ձեւանալ, երկգլխի լինել... Ո՛հ, արքայական թագը նրա ճակատը տանել չի կարող... Ի՞նչ փոյթ, որ եպիսկոպոս է. մի՞թէ իմ պատերազմական յաղթութիւններից կը գերադասեն նորա ազօթքները... Իզո՛ւր հանգուցեալ արքան ինձ մատնացոյց արեց, իրանից յետոյ գահին միակ արժանի՝ եւ իշխանական տիտղոսը տալով, ամբողջ մի նահանգի եկամուտը յատկացրեց... Ո՛հ, ես համոզուած եմ, որ անպատճառ կ'ընտրեն այդ ծերուկ հոգեւորականին: Իսկ դու, Միքայել, պատրաստ իղիւնորից կռուելու: Օթարդիւլը շուտով վերստին կ'սկսէ իր արշաւանքը, իսկ դու զարձեալ գինուոր եղիր քո լեռներում, Բաղկանները պաշտպանելու, որպէս զի ժողովուրդը հանգիստ վայելէ... Ապերախտութիւնը շատ փափուկ եւ գիւրեկան բարձ է... Ո՛հ, զգուշացիր դու, յիմար, գոհնիկ ժողովուրդ, որ վերջ ի վերջոյ գինուորը՝ չ'ոգնէ պատերազմներից: Զգուշացէք եւ դուք, պատուաւոր, ոչ-

խարի խեղճով, նեղսիրտ եւ ստոր քաղաքացիներ, թու-  
լամորթ իշխաններ եւ կեղծաւոր հողեւորականներ, որ  
սուրս մի օր միջից կիսելով, ես դէն չըձգեմ, այն կըտ-  
րուկ սուրբ, որ այսքան տարի ձեզ պաշտպան է եղել,  
հսկել ձեր արտերը, հարստութիւնը եւ ձեր հանգիստը...

Բ Ա Ջ Ի Լ Ի Դ:

Իմ տեղ ուրիշը, իշխան, ձեզ շոյելու համար... կ'ա-  
սէր. «Մի վրդովուել, արիւնդ պղտորիլ... Իսկ ես, Մի-  
քայէլ, ես հիանում եմ քո բուն դայրոյթից: Առիծը  
գեղեցիկ է, երբ մոնչում է: Կեսարների դուստրս՝ իմ  
պատրիկ ծագումով հիացմամբ եմ նայում, ինչպէս բար-  
կութիւնից արիւնը դարկում է ճակատիդ, ձիւնի պէս  
փայլում վէրքերիդ սպինս Իօնչ փոյթ, որ բաղդի բեր-  
մամբ դա՛հ կը բարձրանայ թէ չէ որեւէ մի ծերուկ: Դու  
կըլինես արքայ, կը թագաւորես, իմ սիրելի իշխան...

Երբ ես՝ տակաւին մանուկ՝ ապրում էի Բիւզանդիո-  
նում, պալատական պատգամախօսը ինձ ասաց. «Մի օր  
դու թագուհի կը լինես...» այդ գուշակութիւնը ես միշտ  
աչքիս առաջ ունիմ: Այո՛, Միքայէլ, այս ճակատը, որ  
դու փայփայում ես, արքայական թագի համար է ստեղ-  
ծուած, եւ այդ թագը դու ձեռք կ'ըրես ինձ համար,  
խորամանկութեամբ թէ բռնի ոյժով: Ո՛հ, ինչ գեղեցիկ  
խորամանկութեամբ թէ բռնի ոյժով: Ո՛հ, ինչ գեղեցիկ  
կ'լինես դու իբր վերին դատաւոր. իսկ ես որքա՛ն հպարտ,  
հպարտ, որ միակ անձն եմ ամբողջ տէրութեան մէջ ար-  
քայիս հաւասար: Այո՛, սիրելիս, դո՛ւ թագաւոր, ես այդ  
կամենում եմ բուն ցանկութեամբ... Ես կին եմ, Միքայ-  
էլ, այն էլ յոյն կին, որ ներել չը գիտէ երբէք թշա-  
մուն. եւ վա՛յ նրան, որ զիւր չեկաւ ինձ... Դու  
ինքդ երբեմն ինձ փաղաքելով օձ ես անուանում, իմ

գիրկը ընկած: Թո՛ղ որ օձ լինիմ: Սակայն յիշիր, որ  
թունաւոր սողունը տեղ կայ, որ աւելի պիտանի է, քան  
հզօր գաղանդ: Եւ քո կարող բազուկներդ երբեմն հա-  
րուածելու կարիք չեն ունենալ, որովհետեւ քո տեղ ես  
կարող եմ խածնել, թունաւորել... Այո՛, ես օձ եմ, բայց  
նման այն ասիական իժին, որ միշտ հլու հնազանդ է  
պար ածող խափշիկին եւ միշտ պատրաստ փարելու  
նրա վզին:

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

Ո՛հ, ինչպէս սիրում եմ քեզ, իմ աննման Բաղիլիդ, եւ  
եթէ ես ձգտում եմ արքայական թագի, միմիայն նրա  
համար, որ դու թագուհի լինես... Իսկ որ՛չափ փոխուած  
եմ ես... Կար ժամանակ, որ, ինչպէս ղինուոր, իմ տարած  
յաղթութիւնովս ես գո՛հ էի. մտքովս անգամ ընաւ չի  
անցել ոչ թագ եւ ոչ թագաւորութիւն... Բայց դու եկար  
եւ քո սիրատապ, կրակոտ հայեացքովդ, սիրային այն  
հրաշալի գիշերները, երբ մարդ նիրհում է քաղցր անուրջ-  
ներով, դու սարսափելի խօսքը ինձ չչնջացիր... «Արքայ  
լինել...» Այն օրից ի վեր արքայ լինելու դժնդակ իղձը  
պատել է հոգիս, որ գուցէ եւ ինձ կորստեան մատնէ...  
Թո՛ղ այդպէս լինի. ես քեզ սիրում եմ եւ քո ջերմ սի-  
րոյդ պատրաստ եմ նոյն իսկ կորստեան մատնուել: Ես  
քեզ սիրում եմ այնքան բուն սիրով, որ քնքոյշ շըր-  
թունքներով ջերմ համբոյնները եւ բարձի վրա մաղե-  
րիդ թողած անուշ բուրմունքի յիշողութիւնը, նոյն իսկ  
կռուի դաշտում, ինձ չըջապատում, արիւն, սուր, հուրը  
ի չիք են դարձնում: Այո՛ ես քեզ սիրում եմ: Հրամայէ՛,  
պահանջէ՛, կարգադրէ՛... դէս թագը տանող դժուարին  
ուղին որքան կ'ուզէ թո՛ղ վտանգաւոր լինի. ոչինչ:

Տուր ինձ քո ձեռքդ, ես կը տանեմ քեզ, տեղ կ'հասցնեմ:  
Քեզ հետ միասին ձեռք ձեռքի տուած, Բաղլիլիդ, մենք  
կ'համենք մեր նպատակին, եւ եթէ հարկաւոր լինի ճա-  
նապարհին քո ոտների տակ, նոյն իսկ տղմի մէջ, ես կը  
փռեմ պատերազմներում իմ ձեռք բերած դրօշակները:  
(Լալուռն աղաղակ դրսում:) Իսկ այն ի՞նչ աղմուկ է...  
Եթէ վերջապէս համբաւաբերը լինէր... (Նորից աղմուկ,  
դարպասից մտնում է Կոստանդին Բրանկովիւրը, նրան շըր-  
ջապատում են շարունակ աղաղակող զինուորներ. նրա  
հագուստի տեսից երեւում է, որ նա կոռից է վերա-  
դառնում. աջ ձեռքին սաճիկական երեք դրօշակներ. նորս  
էտեից պահապանները բերում են շրջապակապ՝ մի վի-  
րաւոր սաճիկ մեծաւոր, հաջիի կանաչ չաշնայով, եւ մի  
մասադահաւ կիւն—Միլիցան: Միլիցան հազնուած է ա-  
րեւելեան սարագով. պիստոններից շինած մի վզնոց պա-  
րանցիկ: Այդ աղմուկի վրայ աջ ու ձախ կողմից մըս-  
նում են այլ զինուորներ, ի թիւս որոնց Ուրօշը, Լա-  
գարը եւ Բեկիօն:)

### ՏԵՍԱՐԱՆ ԶՈՐԲՈՐԴ

Միջայեղ Բրանկովիւր, Կոստանդին Բրանկովիւր,  
Բաղլիլիդ, Միլիցա, Ուրօշ, Լալար, Բեկիօ, սաճիկ կարա-  
նաւոր եւ զինուորներ:

Զ Ի Ն Ո Ի Ո Ր Ն Ե Ր:

Յաղթութիւն:

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

(Նկատելով Կոստանդ.) Կոստանդիւն:

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

(Ուրախ:) Աստուած ձեզ պահում է փորձանքնե-  
րից, ձեր հզօր փառքը պաշտպանում: Անհաւատներին ես  
եւս մղեցի:

Զ Ի Ն Ո Ի Ո Ր Ն Ե Ր:

Յաղթութիւն:

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

Ի՞նչ տաճիկները ուզում էին Բաղլիանները անցնել...

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Այո՛, այս գիշեր նրանք փորձեցին Տրայանոսի  
անցքով...

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

Այդ երրորդ անգամն է, ինչ նրանք ձգտում են այդ  
անցքը բռնել:

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Այո՛, սակայն անցքը լաւ էր պաշտպանուած, ինչպէս  
եւ միշտ: Մարկովիլը այնտեղ խարոյկից ոչ հեռու հըս-  
կում էր պահակը. թշնամուն նկատելուն պէս՝ նա իսկոյն  
կրակում է պայմանական խարոյկը, եւ աղաղակ գցում:  
Այդ նշանը շատ լաւ ծանօթ է թշնամուն: Նոցա առաջ-  
նորդները այդ նկատելով, իսկոյն կանգ են առնում եւ  
հրամայում եւս նահանջել, վախենալով, որ մենք կը  
բռնենք նրանց կրճերում: Սակայն ես լաւ ժամանակ  
վրայ հասի իմ քաջերով եւ նրանց վերջապահ գնդի ա-

ռաջը կտրելով, երկու մաս արի թշնամու ոյժը, Հեռնե-  
րըս առած մի քանի ուռմբերն էլ լաւ գործ տեսան։ Չորս  
հարիւրից աւելի տաճիկ ընկաւ կռվում։ Հայրենի լեռնե-  
րը դարձեալ մի անգամ ազատուեցին, եւ մենք կատար-  
եալ յաղթութիւն տարանք։ (Դնուռն է հօր ոտների մօտ  
դրօշակները) Ահաւասիկ եւ մեր յաղթութեան գրաւա-  
կանները...

Բ է Ն Կ Օ:

(Մի կողմ) Մենք դարձեալ յաղթուած։

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

(Գրկաքսաց մօտենալով Կոստանդինին) Մօտեցի՛ր  
հօրդ, իմ քաջ որդեակ... Հրամանատարդ դո՛ւ է քեզանից,  
իսկ սիրող հայրդ քեզանով հպարտ, որ քեզ պէս կարիճ  
օգնական ունէ։ (Դառնալով դէպ կիներ)։ Սիրելի Բագրիւդ,  
դու պէտքէ սիրես նորան, եւ նա քեզ նոյնպէս... որով-  
հետեւ սա իմ միակ զաւակս է... Նայիր դու նորան, ինչ  
բարձր եւ վեհ ճակատ, ինչ համարձակ հայեացք։ Այո՛,  
թէ եւ դեռ շատ անուրջ կայ նորա հայեացքում, սակայն  
այդ ժառանգել է նա իր քնքոյշ մօրից... Իսկ երակ-  
ներումը հոսում է քաջ Բրանկօմիրների արիւնը, եւ նա  
արժանի է այդ անունը կրելու։

Նորա դայեակը պատերազմն է եղել, որ իր կոշտա-  
ցած կրծքից զրահը հանած, կաթի տեղ, մնել է նրան  
ազատութեան սուրբ զգացմունքով. իսկ օրօրօցի քաղցր  
մեղեդուն թնդանօթների ահեղ որոտն է փոխարինել...  
Այր ու բէնը դեռ չը սկսած՝ նա մագլցում էր քարա-  
ժայռերով, իմ մեծ սուսերս երիվարելով. (նկատելով կա-  
շանաւորներին)։ Իսկ ուղքե՞ր են այդ չղթայակապ տղա-

մարդն ու կինը, Կարծեմ, ես շատ որո՛շ ու կտրուկ հրա-  
ման եմ տուել՝ անպայման սպանել բոլորին. կենդանի  
գերի ընաւ չունենալ։

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Յուսով եմ, կը ներէք, հայր, եթէ այս անգամ խախ-  
տել եմ ձեր տուած պատուէրը։ Ես անձամբ զինաթափ  
արի այդ մեծաւորին. նա վիրաւորուած է։ Կռվում էր նա  
հերոսաբար, ինչպէս մի կատաղի առիւծ։ Կենդանի սրան  
ամբողջ բերելով ես ուզում էի լաւութիւն անել... Գթաւ-  
ցէ՛ք, հայր, նորան... (Դժգոհութիւն գիկուորների մեջ)։

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

Եւ ոչ մի չնոր՝ անհաւատին։ Որտեղի՞ց է քո այդ  
գլխաւորութիւնը։ Դու յանդգնում ես իմ խստութիւնը  
պարսաւել։ Ո՛չ, հայրենիքը եւ թէ եկեղեցին եւ փրկել  
եմ անյագ թափած արեան եւ անողորմ սպանութիւն-  
ների միջոցով։ Ինձ հաճելի չէ, Կոստանդին, քո անհա-  
զանդ վարմունքը։

«Ակն ընդ ական, ատամն ընդ՝ ատաման» — տաճիկ-  
ների համար ոչ մի այլ օրինակ։ Իսկ երբ նրանք են յաղ-  
թողը, այդ ստոր արարածները... նրանք լլկաբար բռն-  
նաբարում են մեր կանանց, հերձոտում մեր վիրաւորնե-  
րին։ Ոչ, մահ տաճկին, այդ է միակ արդար պատիժը  
թլպատուած խողբերի համար։

Ձ Ի Ն Ո Ի Ո Ր Ն Ե Ր:

Մահ, մահ...

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Հայր, աղաչում եմ, ներիր, եթէ ակամայ յանցանք եմ գործել: Ես անկարող էի նահատակել անպաշտպան ընկած ծեր վիրաւորին, յիշելով նախնի խաչակիրներին, այն հերոսներին, որոնք նոյնպէս կռուում էին մեզ նման խաչի համար: Ո՛հ, ինչ տարբերութիւն մեր եւ նրանց մէջ... Հայր, գթացէք նրան... (դէպ գիւնուորները) Իսկ դուք, ընկերներ, համաձայն չե՞ք...

Ձ Ի Ն Ո Ի Ո Ր Ն Ե Ր:

Մա՛հ, մա՛հ տաճկին:

Տ Ա Ճ Ի Կ Կ Ա Լ Ա Ն Ա Ի Ո Ր:

Բաւական է, կտրիճ պատանի: Դու պէտք չէ ինձ այս որջը քարշ տայիր: Պարտաւոր էիր հօրդ պատուէրին հնազանդ լինել: Բրանկօմիրը իրաւացի է եւ այդ բոլոր շները նոյնպէս: Ինչո՞ւ ներել ինձ: Արդեօք հայցել եմ ես գթութիւն: Եթէ իմ տեղը դու լինէիր, արինաշաղախ վիրաւոր ընկած ոտներիս տակը, ես քեզ տեղն ու տեղը անխնայ կսպանէի: Թո՛ղ, որ սպանեն ինձ:

Ձ Ի Ն Ո Ի Ո Ր Ն Ե Ր:

Մա՛հ: (Միջայեղի նշանով կախանաւորին դուռն եւ բերում:)

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

Թո՛ղ այդ քեզ դաս լինի:

Բ Է Ն Կ Օ:

(Մի կողմ: ) Ահա թէ ինչպէս է մեռնում հաւատացեալը, Ալլահն է նրա միակ Աստուածը:

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

(Մի կողմ: ) Ո՛հ, անիծեա՛լ պատերազմ:

Բ Ա Ձ Ի Լ Ի Դ:

(Յոյց տալով Միլիցային: ) Իսկ այդ կինը ո՞վ է.

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Այժմ իմն է իրաւունքը եւ ես յայտնում եմ, հայր, որ նա իմ գերին է, պատերազմական աւարից իմ բաժինը:

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

Այդ իրաւունքն ունիս:

Բ Ա Ձ Ի Լ Ի Դ:

Ինչպէ՛ս, Կոստանդին, միթէ դու նորան քեզ հարս ես առնում՝ մի պարող կին, գնչուհի, որ թափառում է զօրքի բեռնակիր սայլերի ետեւից, որի միակ օժիտը վըզիցը կախ տուած այդ խորհրդաւոր ստակներն են, այն էլ, Աստուծուն է յայտնի, ինչ կերպ ձեռք բերած... Այո՛, նա գեղեցիկ է, բայց ոչ իշխանազնիւ վայել: Շատ, շատ նա կարող է քո գիւնուորների զուարճութեանը առարկայ լինել:

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Կարելի՛ է: Այնուամենայնիւ, ոչ ոք չի համարձակուել նորա մի մաղին անգամ դիպչել, եթէ գլխիցը ձեռք չի քաշել: Այդ կինը ինձ է պատկանում. ես ձեզ յայտնում եմ այդ բացարձակ եւ նորան իմ պաշտպանութեան ներքոյ առնում:

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

Կարող ես: Այդ դու կատարեալ իրաւունք ունիս: Բայց խմացիր, այս երկրորդ անգամն է, որ քո վարձունքը ինձ բնաւ ին հասելի չէ: Ես քեզ արգելում եմ, եւ դու պէտք է մոռանաս քո անբարդաւան եւ մաղձոտ ոճը, երբ խօսում ես իմ սիրելի եւ պայազատ ամուսնու հետ: Նա քո լաւը ինկատի ունենալով, բարութեամբ քեզ խորհուրդ է տալիս.

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Բայց....

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

Եւ ոչ մի խօսք: Ես քեզ դեռ սիրում եմ, թէեւ վշտացած. (ցոյց տալով գէտին քափած սաճկական դրօշակները) եւ քո քաջագործութեան այդ վկաների առաջ ներում եմ քո անհնազանդութիւնը: Տարէք այդ դրօշակները ամբողջի հանդիսարանը. (նշան է անում Ուրօշին, որ ժողովում է դրօշակները. ապա Կոստանդինին) Իսկ դու աշխատիր այլ եւս չը վերադառնալ հօրդ եւ իշխանիդ: Ձեռքը տալիս է Բագիդիին. դուրս են գնում աջակողմեան դռնից: Նրանց հետեւում են Ուրօշը եւ զինուորները: Բեկկօն հետեւում է ձախ կողմից: Բեմի վրայ մնում են Կոստանդին եւ Միլիցան):

ՏԵՍԱՐԱՆ ՀԻՆԳԵՐՈՐԴ

ԿՈՍՏԱՆԴԻՆ ԵՒ ՄԻԼԻՑԱ:

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

(Ինքն իրեն, ուշադրութիւն չդարձնելով Միլիցային) Ո՛հ, ինչպէս վիշտը կրծում է սիրտս, յուսահատում ինձ: Այդ նենգ հեղին կինը իրեց ինձնից հօրս եւ նրա մտերմութիւնը: Թո՛ղ անիծեալ լինի այն սեւ օրը, որ միացրեց նրանց: (Նկատելով Միլիցային, որ երկչոտութեամբ մօտեցել էր) Ի՞նչ ես կամենում ինձնից:

Մ Ի Լ Ի Յ Ա:

Ես քո ստրուկն եմ, այդ դու ասացիր... եւ սպասում եմ իմ նոր տիրոջը հրամանին:

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Լա՞ւ արեցի արդեօք, դու թշուառ էակ, ազատելով քեզ մահուան ճանկերից...

Մ Ի Լ Ի Յ Ա:

Ես մահից չեմ վախենում

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Անուշդ ի՞նչ է:

Մ Ի Լ Ի Յ Ա:

Միլիցա:

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Հաւատոյ:

Մ Ի Լ Ի Յ Ա:

Նոյն Աստծուն եմ երկրպագում, որին դու, բայց  
եւ աղօթել է գիտեմ:

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Իսկ հայրենիքդ:

Մ Ի Լ Ի Յ Ա:

Մեծ ճանապարհը:

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Ընտանիքդ:

Մ Ի Լ Ի Յ Ա:

Մայրս փողոցները ընկած ողորմութիւն էր հաւա-  
քում եւ ձեռներին նշանով գուշակում:

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Նա քեզ սիրում էր:

Մ Ի Լ Ի Յ Ա:

Ո՞վ գիտէ: Ստէպ ծեծում էր: Նա ինձ սովորեցրեց  
պարել, իսկ երբ լրացաւ 15 տարեա, պառաւ ինձ  
ծախեց:

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Եւ այնուհետեւ:

Մ Ի Լ Ի Յ Ա:

Եւ այնուհետեւ, իմ սիրուն զինուորական, ապ-  
րում եմ, ինչպէս կարողանում եմ: Կուրծքս լի վշտով,  
շարք դէմքիս (հայթայթում եմ ես օրապահիկս) հաց  
եմ ձեռք բերում, անխտիր ամեն տեղ... Զարհուրանքով  
եմ հայելուն նայում, դէմքս տեսնելու ամօթանքից.  
Նոյն իսկ մի օր փշրեցի հայելիս: Իսկ գիշերն ի բուն,  
պարելուց յետոյ, արտասուքով եմ անց կացնում:

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

(Արձակեցով նրա ձեռներին կապակել): Մնաս  
բարեաւ, զնա եւ ազատ ապրիր:

Մ Ի Լ Ի Յ Ա:

Ինչպէ՞ս, դու քո ձեռքովդ ինձ ազատութիւն ես  
չնորհում:

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

(Տալիս է նրան իր փողի փակը): Այո՛, առ այս  
քսակը եւ աշխատիր լաւ կեանք վարելու... Որովհետեւ  
գեղեցկութիւնդ ինձ վշտացնում է: Իսկ այդ թախծալի  
հրապուրանքդ, խեղճ աղջիկ, պատճառ է եղել քեզ ան-  
գիտակցօրէն դէպ ցեւը նետուել. եւ անառակութիւնը,  
օգտուելով աղքատութեան թշուառութիւններից, խճճեւ  
է քեզ իր հզօր ցանցի մէջ: Դու դեռ այնքան մատաղ  
ես, որ շարիրդ տակից նկատելի է ամօթխածութեան  
շառագունումը—անարատութեան այդ միակ հետքը, որից  
վառվում է կրակոտ հայեացքդ: Դու ամենքից ոտնա-  
հար եղած ծաղկի նման, թէեւ կոխկրտած, բայց դեռ  
կրում ես վաղօրդեան ցօղի վճիռ կաթիլը...

Մ Ի Լ Ի Յ Ա:

Տէր Աստուած, միթէ՞ այս ճիշտ է... կեանքիս մէջ  
առաջին անգամն է, որ խօսում է հետս մի մարդ, որի  
ոչ հոգեւոյ եւ ոչ ձայնի մէջ արհամարանք չը կայ դէպ  
ինձ... եւ ահա՛ առաջին ոսկիները, որ ես ստանում եմ  
ոչ իմ պատուի գնով.... Ո՞վ ես դու, թէեւ զինուոր,  
սակայն աւելի գլխաւատ, քան մի կին, որ առանց իմա-  
նալու իմ ո՞վ լինելս, այդքան բարութիւն ես անում ինձ...

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Եղբայրդ, եթէ կուգես, խեղճ աղջիկ, մի քրիս-  
տոնեայ եղբայր...

Մ Ի Լ Ի Յ Ա:

Իսկ տեսնո՞ւմ ես ով եմ ես...

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Մի խորտակուած թոյլ էակ...

Մ Ի Լ Ի Յ Ա:

Ո՞վ քեզ այդչափ բարութիւն սովորեցրեց:

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Մայրս եւ Աւետարանը:

Մ Ի Լ Ի Յ Ա:

Իսկ ես միմիայն մեղք եմ գործել:

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Աստուած քեզ էլ կը լուսաւորէ:

Մ Ի Լ Ի Յ Ա:

Ներսուած ճահճի մէջ խորասուզուած եմ արդէն:

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Երկինքը այնտեղ էլ է ցոլանում:

Մ Ի Լ Ի Յ Ա:

Անբիծ մարդիկ գարշում են ինձնից:

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Ո՞վ է այնքան անարատ, որ համարձակուի քար  
հետեւ քեզ...

Մ Ի Լ Ի Յ Ա:

Ձը քաշուեցիր դու ինձ քոյր անուանելու եւ քո  
ջերմ խօսքերով սիրտիս քնք քնքով. մի՞թէ կ'ուզենայիր,  
որ կրկին լնկնեմ այն հոսանքի առաջ, որ յաւիտեան  
ինձ կը գլորէ խայտառակ կեանքի ամօթալի անդունդը:  
Եթէ ո՛չ, ապա ետ առ տուած ոսկիդ եւ թոյլ տուր  
այստեղ ապրելու Մահից ազատելով՝ կեանք չնորհեցիր  
ինձ, բարեգթիւ նորան, պահիր ինձ մօտդ, ինչպէս մի  
հլու ստրուկ, միայն թէ պահիր, որովհետեւ ես սարսա-  
փում եմ անցեալս յիշելով. իսկ ապագայից առաւել եւս  
Ի՞նչ կը լինեմ վաղը, երբ կրկին մասնուեմ անողորմ  
բաղդիս: Այս վատթար ժամանակ, մի վայրենի երկրում,  
ազատութիւնը աւելի վատ է ինձ համար, քան անտա-  
նելի ստրկութիւնը: Ո՛հ, տէր իմ, աղաչում եմ, խեղճա՛  
եւ թոյլ տուր, որ ապրեմ այստեղ: Քո յարկի տակ,  
ամենայնանհալ, խաւար անկիւնը արքայութիւն է ինձ

համար: Համաձայնիր դոնէ ինձ տեղ տալու գոանդ չէմ-  
քում. այնտեղ պառկեմ, գիշերը հսկեմ: Ասա՛, որ համաձայն  
ես... Թող ձեռքդ համբուրեմ...

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ի Ն:

Մըրկից սարսափած դու խեղճ թռչնակ, մնա՛, ես  
կաշխատեմ վանդակդ քեզ հաճելի դարձնել:

Մ Ի Լ Ի Յ Ա:

Ուրեմն դու համաձայն ես... Ո՛հ, որչափ չնորհա-  
կալ եմ... Սակայն տուր ինձ մի գրաւական խոստումիդ...  
մի ամենաչնչին բան, որը ամենաթանկագին իրը կը լինի  
ինձ համար, բայց այնպիսի մի բան, որ կարողանամ  
միշտ ինձ վրայ ունենալ: Այսպէս է, տէր իմ, գնչուհի-  
ներիս սովորութիւնը:

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ի Ն:

Ի՞նչ ես կամենում... դօտի՞կս... մատանի՞ս...  
ընտրիր ինքդ:

Մ Ի Լ Ի Յ Ա:

Եթէ ինձ հարցնես, ապա այդ փոքրիկ դաշոյնը  
ես կուզենայի:

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ի Ն:

(Տարով) Ի՞նչիդ է սա պէտք:

Մ Ի Լ Ի Յ Ա:

Անձնասպանութիւն գործելու, եթէ իմ տէրը մեռ-  
նելու լինի.... (Դուրսը աղմուկ)

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ի Ն:

Այս ի՞նչ աղմուկ է:

ՏԵՍԱՐԱՆ ՎԵՑԵՐՈՐԴ

Առաջին գործողութեան բոլոր անձնաւորու-  
թիւնները, ապաքալաւորը: Լազարը, Բեկիօն եւ  
զինուորները մտնում են այդ ու ձախ կողմից,  
Ուրօշը շտապ մտնում է դարպասից:

Ո Ի Ր Օ Շ:

Ուրախացէ՛ք, քրիստոնեայ ժողովուրդ, ծերակոյտը  
Թագաւոր է ընտրել Ստեփան Կախկոպոսին:

Չ Ի Ն Ո Ի Ո Ր Ն Ե Ր:

Կեցցէ՛...

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ի Ն:

(Մի կողմ) Խեղճ իմ հայր:

Ո Ի Ր Օ Շ:

Բաղկանների Թագաւորը այցելում է մեզ մեր լեռ-  
ներում՝ իր օրհնութիւնը տալու... (դառնալով Լազարին  
եւ Բեկիօին) Ճիշտ է՞ր թէ չէ իմ գուշակութիւնը...  
(նոր ցոյցեր) Այդ նա է գալիս.... Լսո՞ւմ էք....

(Միջակի Բրանկովիրը եւ Բազիլիդը մտնում են  
աջակողմեան դռնից)

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

(Կամաց Բազիլիդիսն) Ամենայն ինչ կատարեալ է...  
Նա դալիս է իմ համբաւաբերի հետ, դալիս է յաղթա-  
նակով, որ ինձ ստորացնէ... Ո՛հ, բարկութիւնից ես դո-  
ղում եմ ամբողջ մարմնովս...

Բ Ա Զ Ի Լ Ի Դ:

(Կամաց) Աբիացիր, իզուր ես վրդովում, մենք  
վրէժը կանենք...

(Այդ բոլորիս մտնում ե քաղաւորը, խոյրի վրայից  
քաղ ծածկած, եպիսկոպոսական գաւազանը ձեռքին.  
նրան շրջապատում են հեծեալ իշխանները):

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

(Մի կողմ) Նա ինքն է:

Զ Ի Ն Ո Ի Ո Ր Ն Ե Ր:

Կեցցէ՛ թագաւորը

Թ Ա Գ Ա Ի Ո Ր:

Խաղաղութիւն ամենեցուն: Իշխան Միքայէլ, Կոս-  
տանդին եւ դուք բոլորդ, քրիստոնեայ զինուորներ,  
օրհնեալ լինիք յանուն Հօր եւ Որդւոյ եւ Հոգոյն Սրբոյ:

Բ Ո Լ Ո Ր Ը:

Ամէ՛ն:

Թ Ա Գ Ա Ի Ո Ր:

Պատերազմներում տարած յաղթութիւնները Բրան-

կամիրին ամենաբարձր պատուին են հասցրել: Թափուր  
մնացած հայրենի գահը իսկապէս ինձնից աւելի նրան  
էր վայելում: Սակայն, ի մեծ զարմանս, ժողովուրդը այդ  
շնորհեց ինձ. եւ ես պարտաւոր եմ խոնարհել, երբ այդ  
ամբողջ ազգի ցանկութիւնն է:

Ազգը կամենում է, որ իր քաջ զօրավարը, հայրե-  
նիքի եւ սուրբ հաւատի հզօր պաշտպանը, ի կատար  
ածէ սկսած սուրբ գործը, եւ դորա համար զառամեալ  
ծերոշուտ ընտրեց, որի ջերմ աղօթքները առ Աստուած  
եղած են հայրենի երկրի եւ նրա սուրբ ազատութեան  
համար: Եղիցի կամք Տեառն. ես խոնարհում եմ՝ պար-  
տականութիւնը գերադասելով արտոգոսից, ես հպատակ-  
ւում եմ ազգի ցանկութեանը: Միաժամանակ ծածկելով  
խոյրը եւ թագը, քաջը իմ Բրանկօմիր, նախ քեզ մօտ  
եմ շտապել թագաւորի հայրական համբոյրը ամենից  
առաջ քեզ տալու: Կարճատեւ կը լինի իմ իշխանութիւնը,  
մի ոտս արդէն գերեզմանումն է, իսկ քո փառքի վառ  
արշալոյսը դեռ նոր է ծագում: Հաւատա, որդեակ, որ իմ  
մահից յետոյ դու կընտրուես, բայց կընտրուես թագաւո-  
րելու կատարեալ ազատ հայրենի երկրում: Իսկ մինչ  
այդ օրը, Բրանկօմիր, հոգովդ սրտով միաբանած, ձեռք  
ձեռքի տուած, առաջ կ'տանենք միասին սկսած մեր  
վեհ գործը: Թո՛ղ, որ ամենքն էլ խմանան, որ ոչ մի  
նենգ խորհուրդ կարող չէ ներս սողալ քո անարատ  
կուրծքդ, սիրտդ պղտորել: Ե՛կ, մօտեցի՛ր, գրկի՛ր թա-  
գաւորիդ, որ սիրում է քեզ հարազատ հօր նման, եւ  
ծունր իջիր, հոգեւոր պետիդ օրհնութիւնը առ:

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

(Մի կողմ) Ի՛նչպէս, ե՞ս, ծունր իջնեմ այդ կեղ-

ծաւոր խաբերայի առաջ... Ո՛հ, Տէր իմ, կարողութիւնս  
տուր այդ անարգանքը տանելու:

Թ Ա Գ Ա Ի Ո Ր:

Եկ, մօտեցիր, ես սպասում եմ գրկաբաց: Ի՞նչի  
ես դանդաղում:

Բ Ա Զ Ի Լ Ի Դ:

(Կարնաց Միխայէլին) Արիացի՛ր, նա զեռ արքայ է  
այս բոսփորիս, եւ զու պէտք է հնազանդուես:

(Միխայէլը իրան զայելով մօտեցում է գրկում,  
ապա չոզում: Թագաւորը երկու ձեռները դնում է  
նրա գլխին):

Բ Է Ն Կ Օ:

(Մի կողմ): Ես լաւ ժամանակն եմ տեղ հասել.  
այս մարդը բոլորովին պատրաստ է դաւաճանութեան:

Թ Ա Գ Ա Ի Ո Ր:

Այժմ մնա՛ք բարեա՛ւ: Ես վերադառնում եմ վեդ-  
դին ուրախ եւ երջանիկ, որ ձեզ բոլորիդ տեսայ ու այ-  
ցելեցի ազատ ու հպարտ Բաղիանը: Վերադառնալով,  
Բրանկօմիր, տաճար կը մտնեմ աղօթելու քեզ համար, որ  
հրեշտակապետի նման կանգնած ես այստեղ սաթայէլի  
գէմ, եւ այս անառիկ լեռներից արգելք լինելով բարբա-  
րոսութեան, ա՛հ ու սարսափ ես տալիս եմ քո կտրուկ  
սրովդ յաղթուած թշնամու վրայ:

Զ Ի Ն Ո Ի Ո Ր

Կեցցէ՛ թագաւորը:

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

(Մի կողմ) Քաւթա՛ն, կրակ ու պատիժ թո՛ղ տեղայ  
գլխիդ, վա՛յ քեզ, որ կարծում ես, թէ միացած ենք  
հոգւով եւ սրտով:

Թ Ա Գ Ա Ի Ո Ր:

(Խորհից, աջ ձեռքը վեր բարձրացնելով): Օրհնեալ  
լինիք բոլորդ: (Վարագոյր)

## ԵՐԿՐՈՐԴ ԳՈՐԾՈՂՈՒԹԻՒՆ

Մի դահլիճ ամրոցում, կահաւորւած խիստ գոեհիկ  
նաշակով: Արեւելեան գորգեր, զազանների մորթիներ, գեմ-  
ներ եւ սանիկներից խած դրօշակներ. խորում մեծ  
դուռը. դէպ առաջ ձախ կողմում աւելի փոքրիկ դուռը.  
խակ երկրորդ մակարդակում պատուհան: Դէպ աջակողմը  
վարագոյրով պատած մի գաղտնի մուտք:

### ՏԵՍԱՐԱՆ ԱՌԱՋԻՆ

Բազիլիդ, Բեկկօ, Սօֆիա: Բազիլիդը թեք է ընկած  
մի բազմոցում, իսկ Սօֆիան հովհարում է նրան: Մըս-  
նում է Բեկկօն կիթառան ձեռին:

Բ Ա Զ Ի Լ Ի Դ:

Լարիր տաւիղդ, Բէնկօ... Իշխանը որսի է գնացել...  
(ըսելով է հեռուից որսորդական փողերի ձայնը): Ա՛յ,  
լսո՞ւմ ես այդ փողերի ձայնը... Դէ՛հ, լարիր տաւիղդ...  
Առաւօտից սկսած այստեղ աչքս ջուր կտրեց, այդ աչ-

ոնք լեռներէ բարձրութիւնքը ճախրող արծիւներին նա-  
յելուց... Զանձրոյթից ճաքում է սիրտս, իսկ այս մռայլ  
օրը, երկար այդ ձիւնապատ լեռների կատարներին նա-  
յելը, որոնք մահուան պատանի տեսք ունին, սառցնում  
են մարդու առանց այն էլ պաղած սիրտը... Բայց եւ այն-  
պէս ես սիրում եմ քո երգը... Թո՛ղ որ Սօփիան երգէ:

Ս Օ Փ Ի Ա.

(Երգում է):

Բ Ա Ձ Ի Լ Ի Դ:

Լաւ եղանակ է, բայց սրտիս տաղտուկը չի փարա-  
տում: Աւելի լաւ է, պատմիր, այս մարդու գլխի  
պատմութիւնը. այս գունատ դէմքով գեղեցիկ տղայի  
մասին, որին ամեն երեկոյ գտնում էին զաղաղում  
զարթնած... Փսկ դու, Սօփիա... այժմ դուրս գնա, քո  
հովհարքը ինձ աւելի դայրացնում է... (Սոփիան դուռն  
է գնում):

ՏԵՍԱՐԱՆ ԵՐԿՐՈՐԴ

ԲԱՁԻԼԻԴ ԵՆ ԲԷՆԿՈ:

Բ Է Ն Կ Օ:

Վերջապէս մենք միայնակ ենք, եւ ոչ ոք մեզ չի  
լրտեւում: Ես կրկին վերադառնում եմ, իշխանուհի, մեր  
կիսատ թողած դաւադրութեան: Է՛հ, ի՞նչ կ'ասէք:

Բ Ա Ձ Ի Լ Ի Դ.

Իբրահիմ էֆէնդի, մեր նախագիծը դեռ հեռու է  
իրագործուելուց: Բրանկօմբը տատանում է. ինձ չի յա-  
ջողվում համոզել նրան... Թէեւ սուլթանի առաջարկու-  
թիւնը հրապուրում է նրան, սակայն նա դեռ չի յօժա-  
րում համաձայնուելու:

Բ Է Ն Կ Օ:

Պէտք է, որ պնդէք:

Բ Ա Ձ Ի Լ Ի Դ:

Ամեն օր գրեթէ ես նոյնն եմ կրկնում եւ պնդում:

Բ Է Ն Կ Օ:

Նրա օգուտը այդ է պահանջում:

Բ Ա Ձ Ի Լ Ի Դ:

Նա մաքառում է դեռ իր խղճի դէմ:

Բ Է Ն Կ Օ:

Սակայն նա առաջինը չէ եւ ոչ էլ վերջինը: Շում-  
լայի թագաւոր Հասանը, Տիրնուլայի Յովհաննէս արքան,  
հպարտ Սալվան, սերբիացոյ այդ գոռոզ բռնակալը,  
նոյնպէս այդ ճանապարհով են գնացել եւ այդ կերպ  
իրանց զահը ապահովել: Ազատ մուտք թոյլ տալով  
իրանց հողի վրայ Օսմանլիին եւ Իսլամին, պաշտպանելով  
իրանց տէրութեան մէջ, այսօր նրանք թագաւորում են  
խաղաղ, միմիայն սուլթանին հարկ վճարելով: Բրանկօ-  
մբը նոյն միջոցով ձեռք կը բերի մի գահ, սակայն որից

ինքը զուրկ է այժմ,—այն էլ Դանուբի թագաւորութիւնը. Բալկաններում Այդ մի շատ մեծ եւ առատ վարձատրութիւն է, որ Վեհափառ սուլթանը առաջարկում է նորան: Ես, ինչպէս ասել եմ արդէն, սուլթանը այլ եւս չի կամենում սպասել. նա յողմել է իր քաջ զօրքի պարտութիւնը տեսնելուց այս անառիկ լեռների ստորտում: Թո՛ղ Բրանկօմիրը առանց պատերազմի թող տայ մեզ Բալկանը անցնել: Օթարգիւլ փաշան, որ սուլթանի սիրելին է, իսկոյն եպիսկոպոսին գահնկէց կանի եւ թագը Միքայէլին կը տայ: Ղուռանը եւ Աւետարանը կ'սկսեն հաշտ ապրել միասին. կը դադարի այնքան անմեղների արիւնը թափուել, եւ Դանուբի երկրում կեանքը կը սկսի խաղաղ եւ ուրախ ընթանալ: Պոնտոսի ափերից մինչ Կարպատեան լեռները այլ եւս արիւնահեղ պատերազմի երես չեն տեսնիլ: Միքայէլի թագաւորութիւնը կ'լինի խաղաղութեան թագաւորութիւն: Իսկ այդ բոլորի փոխարէն, տարեկան ընդամենը մի 100 քսակ ոսկի նա կը վճարէ սուլթանին: Այդ մասին Վեհափառ տիրոջս տուած ֆիրմանը ինձ մօտ է գտնուում: Քանիցս ես արդէն յիշել եմ ձեզ, իշխանուհի, եւ դուք խոստացել էք ձեր աջակցութիւնը, որ համոզէք Միքայէլին... Իսկ նա շարունակ մերժում է:

Բ Ա Ջ Ի Լ Ի Դ:

Կարծում ես, Իբրահիմ, այնքան էլ զիւրկն է թեքել Միքայէլի յամառ բնաւորութիւնը: Մեր ծրագիրը մեծ արժէք ունէ մեր երկուսիս աչքում. իսկ այդ բիրտ զինուորը զորան դաւաճանութիւն է անուանում: Նորա

աղանջներին ես շարունակ քո հրապուրիչ առաջարկն եմ չչնչում, իսկ նա հաղիւ է ուշք դարձնում, եւ մինչեւ անգամ կասկածանքով է վերաբերվում: Բայց ես չեմ վհատում, թէ եւ դեռ նշմարվում է նրանում ագնուութեան կայծը. սակայն վրդովիչ հողին արդէն պզտորել է նրա գնդակներից կարծրացած սիրտը...

Բ Է Ն Կ Օ:

Պէտք է ամեն ճիշդ թափել: Նա ձեզ սիրում է, իշխանուհի, եւ այդ բոլորն սէրը մի շատ զօրեղ գործիք է ձեր ձեռքին... Էլ ի՞նչ կին էք, որ չ'ընկճուի նա ձեր գեղեցկութեան առաջ:

Բ Ա Ջ Ի Լ Ի Դ:

Համբերութիւն է պէտք, դեռ եւս յոյս կայ: Ես իմ ուղածը անպատճառ ձեռք կը բերեմ, իսկ դու ցոյց տուր ֆիրմանը: Ես մի ուզում եմ էլի տեսնել...

(Բեկիօն հանում է ծոցիցը մի կանաչ ժապաւեկով մագաղաք, մոմով կնիւած, ու երկխոսութեամբ համբուրելով տալիս Բազիլիդին):

Բ Ա Ջ Ի Լ Ի Դ:

(Կարդում է): «Փառք միակ Ալլահին: Ես, Մուհամեմ մէք Սուլթան համայն հաւատացեալների, Աստուծոյ հօր կամքով, որին մատուցանելով, ինչպէս խոստացեալ եմ այս գահնազրով թագ եւ թագաւորութիւն ամբողջ երկրում, լեռներից մինչեւ հովիտը, այն սլաւոնին, լինի նա պայազատ իշխան,

«Թէ գոհնիկ շինական, որ ուղեցոյց կը լինի հով-  
«տում բանական զօրքիս, անցնելու անառիկ Բալ-  
«կանները, որ մղկիթները ազատ կը թողնի եւ ոս-  
«կով հարկ կը վճարէ մեզ: Այս խոստումը հաստա-  
«տում ենք երգմամբ եւ մեր սեփական կնքով  
«վաւերացնում այս դաշնագիրը...»

Բ Է Ն Կ 0:

Որպէս զի դաշնը կապած լինի, պէտք է, որ Բրան-  
կօմիրն էլ իմ վեհափառ սուլթանի կնիքի մօտ իր  
կնիքը դրօշմի:

Բ Ա Զ Ի Լ Ի Դ:

(Փոքր ինչ յոռիքիւնից յեւոյ): Ո՛հ, ինչ հրաշալի  
երա՛շ...

Բ Է Ն Կ 0:

(Առնելով մագաղաթը): Ուրեմն պէտք է վճուել  
այո՛, կամ ոչ:

Բ Ա Զ Ի Լ Ի Դ:

Ի՞նչ ես ուզում ասել:

Բ Է Ն Կ 0:

Այն, որ բաւականին միջոց էր տրուած վճուելու  
եւ դործը վերջացնելու: Սուլթանը ձանձրացել է ժամա-  
նակ տալուց եւ սպասելուց: Եթէ այս գիշեր վերջնա-  
կան պատասխան չ'ստանամ, եւ Բրանկօմիրը դարձեալ  
շարունակի իր տատանմունքը, ես հէնց այս գիշեր կը  
մեկնեմ այստեղից...

Բ Ա Զ Ի Լ Ի Դ:

Կը մեկնե՞ս:

Բ Է Ն Կ 0:

Եւ միեւնոյն պայմանը կառաջարկեմ նորան, լսում  
է՞ք, իշխանուհի, ով որ աւելի վճուական է, լինի նա իշ-  
խան, հասարակ զինուոր թէ գոհնիկ շինական: Եթէ  
առանց վարանելու ցոյց կը տայ մերոնց կիրճը անցնելու  
ճանապարհը, երեկուան այդ սորուկը կամ շինականը կը  
դառնայ թագաւոր...

Բ Ա Զ Ի Լ Ի Դ:

Բաւական է, լո՛ր, յանդուգն տաճիկ, եւ զգուշա-  
ցիր... իմ մի խօսքը բաւական է քեզ ոչնչացնելու: Իբ-  
րահիմ, դու մոռանո՞ւմ ես. լաւ նայիր այդ գլխատուած-  
ների ծաղրալի գանգերին պարիսպների ժանիքներից կախ...

Բ Է Ն Կ 0:

(Ուտերը վեր փաշելով): Ես ձեզ խղճում եմ, հա-  
ւատացեալը գիտէ մեռնել: (Խսկոյն խօսակցութեան եղա-  
նակը փոխելով): Ուրեմն, իշխանուհի, դուք մերժում էք  
առաջարկածս պայմանը:

Բ Ա Զ Ի Լ Ի Դ:

Բնա՛ւ: Դու հէնց ա՞յս գիշեր ես պատասխան ուզում:

Բ Է Ն Կ 0:

Այո՛, հէնց այս գիշեր... Ձեզ արդէն յայտնի է, որ  
կրճում եղած պահակներում պահապաններ կան, որոնք

հակում են խարոյկները մօտ ականջները սրած: Վտանգի ժամանակ նրանք աղաղակ են բարձրացնում, խարոյկները կրակում: Ո՛հ, այդ խարոյկները մեզ շատ են վրնասում: մեր ճանապարհը կտրում եւ յարձակումի նախագիծը խանգարում: Մերոնք հարիւր անգամ Բալկանները վերցրած կը լինէին, եթէ այդ չարաբաստիկ բոցերը չլինէին: Այսօր պէտք է պահապանները փոխուին: Համոզէք, որ այս գիշեր պահապաններ չ'լինեն, երբ մերոնք կը մտնեն անցքը, այլ ինքը իշխանը միայնակ կէս գիշերին դնայ այնտեղ եւ սպասէ: Ես իմաց կը տամ Օթարգիւ փաշային:—Մենք կը գիմենք Տրայանոսի անցքը եւ այնտեղ, այն կամարի տակ, ուր երբեմն Հովմէական հօր կայսրը իր յաղթանակն էր տօնում, Օսմանլին եւ Սլաւօնը իրար ձեռք ձեռքի կը տան, կը հաշտուին: Ապա անցնելով լեռները Վեդլին կը գնան: Իսկ վաղը... Վաղը դուք արդէն թագուհի էք...

Բ Ա Ջ Ի Լ Ի՞Դ:

Շատ լաւ: Միքայէլը շուտով կը գայ. (ցոյց տալով դէպ ձախ) դու այնտեղ սպասիր, այն նրբասրահում (galerie):

Միքայէլին համոզելով եւ նրա յօժարութիւնը առած՝ մենք միասին քեզ մօտ կը դանք: Այն ժամանակ դու, որի համար կինը մի ջնջին էակ է, մի ստրուկ, կը տեսնես անձամբ եւ կը կշռադատես մարդուս վրայ իմ ունեցած ազդեցութեան չափը: Երգչուհի եմ, ինչպէս կին, որ կը ձգեմ նրա կրծքի մէջ՝ այն լափող կայծը, որ կը բորբոքէ նորա յիսակալութեան եւ փառասիրութեան ոգին, եւ նա վարակուած այնպէս կը փափկի, որ պատ-

րաստ կը լինի ամեն մի քայլի, նոյն իսկ մահուան գնով. իսկ առայժմ ցտեսութիւնս (Դուրս ե գնում):

Բ Է Ն Կ Օ:

(Միայնակ մի առ ժառանակ): Ես իմ հրահանգը վերջացրի:

# ՏԵՍԱՐԱՆ ԵՐՐՈՐԴ

ԿՈՍՏԱՆԴ, ՄԻԼԻՅԱ, ՌԻՐՕՇ, ԼԱՋԱՐ ԵՒ ԲԷՆԿՕ.

Կոստանդինը մտնում ե խորհից երկու զինուորների հետ խօսելով. Միլիցան հետեւում ե նրանց. Բենկօն, նկատելով Կոստանդինին, փաշվում ե մի կողմ:

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Այդպէս ուրեմն, մի ամիս է, ինչ յարձակում չէ տեղի ունեցել:

Ռ Ի Ր Օ Շ:

Ո՛հ, իշխանս Հովտում, ուր նրանք բանակ են ձգել, ոչ մի շարժում եւ ոչ մի նշոյլ անգամ չի նկատվում, ոչ յարձակուելու եւ ոչ էլ նահանջի:

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Այդ Օթարգիւիցը չէ, որ երբեմն մեզ այնքան անհանգստութիւն էր պատճառում: Շատ զարմանալի՝ է այդ. բայց պէտք է աւելի եւս զգոյշ լինել... Այս գիշեր, Ուրօշ, եւ դու, Լաղար, փոխվում են պահապանները... Լաւ նայեցէք, որ ոչինչ չմոռացուի:

Լ Ա Զ Ա Ր:

Իւրաքանչիւր պահակում արդէն պահապան կայ,  
խարոյկների մօտ վստահելի անձինք են նշանակուած.  
Իսկ դէնք եւ մթերք բաւական ունեն. կ'ուզէ՞ք նայել  
նրանց, իշխան:

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Ո՛հ, որովհետեւ այս գիշեր հայրս է անձամբ գնալու  
եւ նա միայն գիշերուայ պայմանական խօսքի իրա-  
ւունք ունի:

Բ Է Ն Կ Օ:

(Մօսկնում է Կոստանդինին եւ խոնարհ գրոյխ  
Տալիս): Իմ ամենախոնարհ յարգանքներս քաջ իշխանիդ,  
որ նոյն իսկ խաղաղութեան ժամանակ էլ պատերազմա-  
կան հոգսերով է զբաղուած:

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

(Արհամարհանքով): Ես ատում եմ չողքորթու-  
թիւնը. այդ թերեւս կանանց հաճելի լինի, եւ դու կա-  
րող ես, որչափ կամենում ես, չոպլել նրանց, իսկ ինձ  
այդ պատուից ազատիր: (Բեկկօն գրոյխ է Տալիս եւ ասե-  
լորեալ շի հայեացք նետելով հեռանում): (Զիւնուոր-  
ներին): Այժմ կարող էք գնալ, բարեկամներս: (Զիւնուոր-  
ները հեռանում են):

ՏԵՍԱՐԱՆ ԶՈՐՐՈՐԴ

ԿՈՍՏԱՆԴ Եւ ՄԻԼԻՅԱ

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

(Ուշադրութիւն չը դարձնելով փոքր ինչ հեռու  
կանգնած Միլիցային): Ուրեմն դադարեց պատերազմը.  
ամեն ինչ խաղաղ է... Ո՛հ, որչափ ծանր է այս հան-  
գիստը եւ ինչքա՞ն երկար եւ ձիգ են թւում օրերը զի-  
նուորի հանգստութեան. մինչ նրա կեանքի միակ նը-  
պատակը վտանգների մէջն է կայանում: Ծանր է զի-  
նուորին սպասել առանց պատերազմի...

Մ Ի Լ Ի Յ Ա:

(Մօսկնում է): Տխուր է իմ երիտասարդ իշխանը:

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Ինչպէս տեսնում ես, սիրելիս, եւ ոչինչ չի կա-  
րող օգնել:

Մ Ի Լ Ի Յ Ա:

Ինչպէս չէ՞:

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Ի՞նչպէս:

Մ Ի Լ Ի Յ Ա:

Մի խօսքով:

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Հապա՛ այդ խօսքը՝

Մ Ի Լ Ի Յ Ա:

Վտանդ է:

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Ի՞նչ ես ասում:

Մ Ի Լ Ի Յ Ա:

Այդ կեղծ եւ խարդախ երգիչը, որ վայելում է սէք  
Բաղլիկի համակրութիւնը, եւ որին հայրդ հիւրընկա-  
լում է իր յարկի տակ...

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Յետո՞յ:

Մ Ի Լ Ի Յ Ա:

Զգուշացի՛ր նրանից, տէր իմ, զգուշացի՛ր:

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Ես չեմ թագցնում իմ զգուանքը դէպ այդ ստո-  
րաքարչ շողոքորթը:

Մ Ի Լ Ի Յ Ա:

Ո՛չ, նա աւելի ստոր է, քան կարծում է իմ տէրը:  
Այդ Բէնիօն տաճիկ է:

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Տաճի՞կ: Ինչպէ՛ս, թշնամին յանդգնե՛լ է լրտես ու-  
նենալ մեր պարիսպներում...

Մ Ի Լ Ի Յ Ա:

Այո՛, նա տաճիկ է:

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Իսկ ի՞նչպէս դու նրան ճանաչեցիր... Գոնէ հաս-  
տատ դու այդ համոզուած ես:

Մ Ի Լ Ի Յ Ա:

Ես դեռ կասկածում էի, իսկ այժմ հաստատ հա-  
մոզուած եմ, որ այդ ճիշտ է: Երբ դեռ ամօթալի եւ  
թշուառ մի պարող գնչուհի՝ ես գտնվում էի անգուլթ  
ճակատագրի ճանկերում, որից դուրս կորզեցիր քո հզօր  
ձեռներովդ, Օթարգիւլ փաշան գիշերները ժամանակ անց-  
կացնելու համար, երբեմն կանչում էր ինձ պարելու:  
Այն առիւծի մօտ եմ ես տեսել այդ աղուէսին: Այո,  
փաշայի մօտ, նրան հաւասար զարդարուած նստած էր  
իրան վայել պատուաւոր տեղում... Ես նախ իմ աչքե-  
րին չէի հաւատում, նրան այստեղ տեսնելով, իր անձը  
հաղար վտանգի ենթարկած: Ես կարծում էի, որ սխալ-  
վում եմ, որովհետեւ տաճիկը այդչափ յանդուգն չի  
լինիլ... Կասկածը ինձ հանգիստ չէր տալիս, ես հետեւում  
էի նրան: Երէկ զիշեր ես լաւ հետամուտ եղայ կեղծ  
գնչու երգչին: Նա, կարծելով թէ մենակ է, աղօթում էր,  
եւ ես տեսայ, ինչպէս նա կատարում էր իւր նամազը

երեսը Մեքքայի կողմը դարձրած: Ձգուշացի՛ր նրանից  
 եւ թէ քո խորթ մօրից, այդ յոյն կնոջից: Աչալուրջ  
 հսկիր տունդ, տէր իմ, որովհետեւ հաւատարիմ շունդ  
 դաւադրութեան հոտ է առել:

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ի Ն:

Շնորհակալ եմ... Վտանգը այնքան էլ մեծ չէ...  
 Մի ժամն էլ բաւական է կախաղան սարքելու. այն ժա-  
 մանակ տաճիկները հեռուից կը տեսնեն իրանց լրտեսին  
 կախաղանի վրայ: Ես գնում եմ:

Մ Ի Լ Ի Յ Ա:

(Բռնուճ է նրան): Դեռ սպասիր, տէր:

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ի Ն:

Իսկ ինչո՞ւ:

Մ Ի Լ Ի Յ Ա:

Աղաչում եմ, տէր, մինչ վերջը լսիր ստրկուհուդ:

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ի Ն:

Ուրեմն խօսիր:

Մ Ի Լ Ի Յ Ա:

Այդ ձեռները, որոնք արձակեցին իմ կապանքները,  
 երբ ես յայտնեմ իմ սարսափելի կասկածանքը, գուցէ  
 զայրոյթից ինձ վրայ բարձրանան եւ իրանց ուժգին  
 հարուածով կիսամեռ մեկնեն ինձ ոտներիդ տակին.  
 Թոյլ տո՛ւր, տէր իմ, որ նախ համբուրեմ այդ ձեռները  
 հարուածից առաջ:

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ի Ն:

Ես քեզ սպանեմ... եւ ինչո՞ւ համար: Ի՞նչ է քո  
 կասկածը:

Մ Ի Լ Ի Յ Ա:

Ո՛հ, անարատ, անկեղծ հոգի, իմացիր որ յոյն կինը  
 թագ է ցանկանում, եւ թշնամին նրան առաջարկում է  
 այդ թագը... Մտածիր դու դաւադրութեան մասին: Յի-  
 չիր, Կոստանդին, Յովհաննէս Տիրնովացուն, Գոռոզ  
 Սալվային եւ այլ նման շատերը՝ բողբաճներ, սերբեր,  
 որոնք ընդունակ են խայտառակ կերպով խոնարհել  
 տաճիկն թագի համար. հայրենիքի ազատութիւնը թըշ-  
 նամուն կը ծախեն, խաչը կիսալուծնին ենթարկելով:  
 Այո՛, այդ Բէնկօն հասարակ լրտես չէ, ինչպէս ասացի,  
 այնտեղ թշնամու մօտ նա մեծ յարգանք էր վայելում:  
 Աչքիցդ բաց մի թողնիլ, տէր իմ, եւ այդ բիւզանդացի  
 կնոջ. յիշիր, որ նա սաստիկ ապուռ է եպիսկոպոսին.  
 Թագի համար նա ընդունակ է ամեն ինչ զոհել... Իսկ  
 այդ տաճիկը, որին մենք կասկածանքով ենք վերաբեր-  
 ւում, ո՞վ գիտէ թէ քղանցքի տակից ձեր խորթ մօրը  
 թագ չէ ցոյց տալիս...

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ի Ն:

Ասածներդ ինձ վրայ սարսուռ են բերում... Այո՛,  
 ճիշտ է, երբեմն փառասիրութիւնը յանցանք է ծնում.  
 Իսկ Բաղդիլիդան փչացած սրտի տէր է... Եթէ դու չը  
 նախազգուշացնէիր, գուցէ նա թոյլ տար որ եւ է մի  
 անմիտ ցնորք իրագործելու, բայց ես կը յայտնեմ հօրս,  
 որ միակ տէրն է, կը պարզեմ նորան եղբւրթիւնը:

նի զուր ե աշխատում դաւադրութեան կեղտոտ ցանցերով խճճել այդ ծեր առիւծին. նա դայրացած բաշի մի թօթափիւնով կ'ոչնչացնէ այդ սարդի ոստացնը... Մի խօսքով, ես բոլորը կը յայտնեմ նորան:

Մ Ի Լ Ի Յ Ա:

Հանդարտացէ՛ք փոքր ինչ, աղաչում եմ, տէր, եւ մինչ վերջը լսէ՛ք: Թո՛ղ, որ իմ գլխիս տեղայ բոլոր թշուառութիւնը, միայն թէ դու զգուշացի՛ր, զգուշացի՛ր բոլորից, նոյն իսկ հօրեցդ...

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Գ Ի Ի Ն:

(Զայրացած ձեռքը բարձրացնելով): Իմ հայրը... թշուա՛ռ ստրուկ...

Մ Ի Լ Ի Յ Ա:

Խփի՛ր, միայն ի նկատի ունեցիր, որ հայրդ էլ է ձգտում թագաւոր լինել...

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Գ Ի Ի Ն:

Միլիցա՛:

Մ Ի Լ Ի Յ Ա:

Երբ չունը վտանգի հօտը առնելով սկսում է հաջել, անդադար տէրը թակում է նրան... Ի՞նչ արած, խփի՛ր... Ի՞նչ փոյթ թէ արիւնս հոսելով կը ներկէ գետինը, թող չունը սատկի, միայն թէ նրա տէրը վտանգից ազատուի...

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Գ Ի Ի Ն:

Հայրս... այդ սարսափելի՛ է:

Մ Ի Լ Ի Յ Ա:

Թող սիրտս ճաքի, տեղն ու տեղը կայծակնահար լինեմ, թէ բնազդումս խաբում է ինձ: Ես անձամբ, աչքերովս տեսայ, ինչպէս Բրանկօմիրը եւ այդ տաճիկը ծածուկ հասկացնում էին իրար հայեացքով. եւ այդ հայեացքը... ա՛սեմ արդեօք... դաւադրութեան հայեացք էր...

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Գ Ի Ի Ն:

Նա՛, հայրս—դաւադիր...

Մ Ի Լ Ի Յ Ա:

Գիտեմ, տանջում եմ քեզ իմ պատճառածս վըշտով... բայց ինքդ դատիր, ինչպէ՞ս է նա տխրել, մրտաքատակ ընկել, դէմքը մոայլել, այն օրից ի վեր ինչ ծերունի եպիսկոպոսին թագաւոր են ընտրել... Միքայէլը աշխատում է ամեն կերպ վրէժ առնել... Այո՛, առաջ գուցէ զինուորի պատիւը ուղղութեամբ վեր դասելով զսպէր իրան, բայց այժմ Բաղլիլիդան զրդում է նորան վրէժխնդիր լինել... Նոյն իսկ սիրոյ քաղցրիկ բոպէները, անպատիւ կինը, սիրոյ բաժակը կը թունաւորէ, իսկ ռիակալութեան սեւ թոյնը իր դործը լոբեւայն կը տեսնէ... հաւատա՛ ինձ, ինչպէս որ մերիկը պղտորում է կապուտակ ջինջ երկնակամարը, այնպէս էլ հօրդ աչքերում արդէն նկատելի է տակաւ առ տակաւ կուտակուող ոճրագործութեան մաքի պղտորը...

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն.

Ո՛հ, լո՛ր՛, լո՛ր՛... Ես արդէն սարսափում եմ, որովհետեւ մի տեսակ ներքին ձայն կ'առնեմ ինձ դրդում է քեզ հաւատալ—Հա՛յրս... կասկածել նորա՛ն... այդ սարսափելի՛ է...

Մ Ի Լ Ի Յ Ա.

Դու արդէն բոլորը գիտես, ինչ վտանգ է սպառնում, այժմ դատիր եւ վճռիր ինքդ: Քո ստրուկը բոլորը ասաց. այժմ կը լռէ:

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Աստուած իմ, ես կը խելագարուեմ... սակայն եթէ այս ճիշտ է: Իսկ եթէ հա՛յրս իրօք... Ո՛հ, ո՛չ, ո՛չ... Այդ չափից դուրս ստոր է, այդ կերպ վաճառել թէ հո՛գի թէ հաւա՛տ եւ թէ հայրենի՛քը... Նա՛ դաւաճան... Նա՛, որ ամբողջ երեսուն տարիներ փառքով հայրենիքին է ծառայել: Ո՛հ, պէտք է բոլորը իմանալ... ես ուզում եմ տեղն ու տեղը խտրութիւնը տեղեկանալ:

Մ Ի Լ Ի Յ Ա.

Այդ շատ ճիշտ է: Այստեղ ամեն օր որսից յետոյ իշխանը գալիս է այս փակ սենեակում հանգստանալու: Բազիլիդը եւ Բէնկօն միայն ընդունվում են այստեղ... (Նա բարձրացնում է վարագոյրը եւ ցոյց տալիս ետեւը մի անկիւն, ուր մի մարդ կարող է ճեղքաւորուել): Ահա—ւասիկ թագնուէք այնտեղ:

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Լրտեսե՛լ... հօ՛րս... ե՞ս... Ո՛հ, Աստուած իմ...

բայց դուք եւ այս նրան ազատելու համար է... (ըսվում է փողերի ձայն): Այդ նա է որսից վերադառնում... Ո՛հ, ես կամենում եմ բոլորը ճիշտն իմանալ... հաւատի եւ հայրենիքի համար, ես բոլորը կը տեղեկանամ, եւ ո՞վ կ'ուզէ լինի դաւաճանը, նոյն իսկ եթէ հայրս է, միեւ—նոյն է, կը մատնեմ նրան արդարադատութեան: (Մտնում է վարագոյրի ետեւը):

Մ Ի Լ Ի Յ Ա.

(Մի բոսիկ շուռ): Խեղճ իմ իշխան, գիտեմ, հա—րուածը անակնկալ էր. բայց ստրուկդ հանգիստ է, որով—հետեւ նա հաւատացած է, որ քեզ չի խաբում:

#### ՏԵՍԱՐԱՆ ՀԻՆԳԵՐՈՐԴ

Միֆայել Բրանկովիւր, Բազիլիդ, Միլիցա եւ ռստրդներ.

(Միֆայելը ռստրդական աշինը ձեռքին մեկնում է շրջապատւած ռստրդներով, նրան հետեւում է Բա—զիլիդը):

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

(Հեղճուքեամբ): Արջ սպանեցի՛ Փառաւոր մի որս, 'ի հարկէ Բազիլանների յաղթական քաջ առաջնորդին վայել: Մի աշուկի կատաղի գազան, շատ մեծ տեսակը... Մի հարուածով շահաւատակ արի... Է՛հ, չուտ կաշին մաշկէք, իսկ մորթին իմ կողմից ծերունի արքային ընծայ տարէք, որպէս զի նա ձմեռը չը մրսի: Նա պատերազ—մական աւար չի սիրում, ինչպէս մի սուրբ: Նրա ա—ղօթքների չնորհին է, որ մենք խաղաղութիւն ենք

վայելում... Կար ժամանակ, որ թագաւորիս համար յաղ-  
թուած տաճիկներից զբոշակներ էի խլում. այժմ սպա-  
նածս մի արջ է միայն: Ուրեմն մորթին թագաւորին է  
պատկանում, դէ՛հ տարէք նորան շո՛ւտ: (Որսորդները  
դուռն եւ գնում: Միլիցան աննկատելի հետեւում է  
նրանց):

### ՏԵՍԱՐԱՆ ՎԵՅԵՐՈՐԴ

ՄԻՔԱՅԷԼ ԲՐԱՆԿՈՄԻՐ ԵՆ ԲԱԶԻԼԻԴ

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

(Դառն ժպիտով): Ծիծաղելի է մինչեւ անգամ  
մտածել, բայց այս է իրողութիւնը: Սլաւոնական ամե-  
նաքաջ եւ յայտնի զօրավարը այժմ ցլավայրենիների եւ  
արջերի հետ է կռիւ մղում...

Բ Ա Զ Ի Լ Ի Դ:

Իսկ ես, որ ծնունդ եմ արքայական ճոխութեան  
մէջ, որ ծագում եմ ծիրանաւորներից, այստեղ տառա-  
պում եմ, լոկ ձիւնապատ լեռների կատարների փայլուն  
սառնամանիքը տեսնելով եւ գնչուի կոպիտ երգի ձայ-  
նովը հիանում, տաղտուկս փարատում: Իմ վիճակը քո-  
նիցը լաւ չէ... Եւ ո՞վ է մեղաւոր... Այստե՛հետեւ մենք  
պէտք է ձեռք ձեռքի տուած մեր դժուարին ճանա-  
պարհը բռնենք...

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

Բաւական է, ես շատ եմ տանջուել քո տհաճու-  
թիւնից: Քեզ համար, ինքզ զիտես, թէ ինչ բուռն ցան-

կութեամբ էի ձգտում ձեռք բերել այն դահը, որ նենգա-  
բար Ստեփան եպիսկոպոսը ստացաւ, իսկ այժմ ի՞նչպէս  
ես կամենում, որ ես այն ձեռք բերեմ: Ի՞նչպէս նորան  
յաջորդ: Բայց այդ ո՞րքան ժամանակ կը տեւի: Զը նայած  
իր վաթսուեամեայ հասակին, նա դեռ շատ առոյգ է եւ  
առողջ. նորան պաշտում են, ինչպէս մի սրբի: Այդ  
ապիրատը կը զառամի իր գահի վրայ հօր պէս բոլորից  
պաշտուած: Իսկ Լիբէնը, Կիլանդարի յայտնի պատգամա-  
խօսը, գուշակել է, որ նա 100 տարի կապրի: Դժոխ՛ք,  
ա՞պրել 100 տարի... Լա՛ւ, իմացիր, անիծե՛ալ ծերուկ,  
որ քո կեանքդ կախուած է այն դաշոյնի ծայրից, որի  
դաշնակը ձեռքիս է գտանվում... Եթէ կամենամ, կարող  
եմ մի օր վերջ տալ նորան եւ ստել, նոյն իսկ գուշա-  
կին: Այո՛, ես մինչեւ անգամ մարդասպան կը դառնամ,  
եւ երբ հարուածելով վերջ կը տամ կեանքիդ, այնու-  
հետեւ ոչ ոք էլ չի կարող խել ինձնից կողոպտածս  
գահը: Այստեղ ես տեղ կը տամ իմ Բաղիլիդին, որ կը  
թեթեւացնէ իշխանութեանս ծանրութիւնը. եւ ես կը  
բարձրանամ գահի վրայ, ոտիս պատուանդան դարձրած  
Ստեփանի դիակը...

Բ Ա Զ Ի Լ Ի Դ:

Քո՛ բարկութիւնը, Միքայէլ, այնուամենայնիւ ու-  
նայն է, նորան ամբողջ մի ժողովուրդ է պաշտպանում,  
եւ նոյն իսկ քո զինուորներն անգամ վրէժ կառնեն  
յանցաւորից:

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

Ուրեմն մի կողմ դնել, ի՞նչ է, գահի փափագս

եւ խոնարհել այդ «հայր մեր» ասող կեղծ փարիսեցու առաջ: Այդ զարհուրելի է. ի՞նչ անել...

Բ Ա Ջ Ի Լ Ի Դ:

Այն, ինչ ուրիշները ինչ Հասանը, Յովհաննէսը, Սալվան եւ այլ իշխաններ, որոնք հզօրի կողմը անցան...

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

Դու այդ շատ անգամ ես ասել ինձ... եւ ես յաճախ մտածում եմ այդ մասին... Միթէ՞ միաբանել տաճկին... Ո՛հ իմ անցած յաղթանակներ...

Բ Ա Ջ Ի Լ Ի Դ:

Սակայն ես քեզ լուր յայտնում եմ ինձ յանձնարարած առաջարկութիւնը.—պէտք է վճռել այժմ, իսկոյն կամ երբէք:

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

Առաջարկութիւն, ի՞նչ:

Բ Ա Ջ Ի Լ Ի Դ:

Հպարտութեան տեղ չէ այժմ: Տատանմունքով անհնար է գործ կատարել... Պէտք է վճռել, քակել հանգոյցը թէ ոչ, որովհետեւ քո անվճռականութիւնդ յոգնեցրել է Իբրահիմ էֆէնդուն, եւ նա կը մեկնէ այս գիշեր եւ եթ, եթէ դու դարձեալ մերժես:

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

Ի՞նչպէս: Այս գիշեր:

Բ Ա Ջ Ի Լ Ի Դ:

Եւ այն վարձատրութիւնը, որ դու կարող ես ստանալ, Բալկանների թագաւորութիւնը, տաճիկը կը գնա՛յ, լսո՞ւմ ես, լա՛ւ ուշք դարձրու, Միքայէլ, առաջարկելու նորան, ով կը բանայ նրանց լեռների անցքը... Եւ արքայական փայլուն թագը կը պսակէ քո ստորագրեալներից որեւէ մէկի գլուխը, նոյն խակ եթէ գոհնիկ չինաւ կանխ մէկը լինի նա:

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

Սլաւոնների մէջ դաւաճան չի ճարուիլ. բոլորն էլ, աւա՛ղ, հաւատարիմ են:

Բ Ա Ջ Ի Լ Ի Դ:

Դէ՛հ, ուրեմն դու էլ եղիր, ինչպէս նրանք են, մի կողմ դիր պատուասիրութիւնդ, նստիր այս որջում եւ հսկիր պահակիդ, ուղիղ այնպէս, ինչպէս զինուորներդ, միայն թէ փաւը եփուի կաթսայում եւ ժամանակին որոշեալ պաշարը տրուի խելօք ենիչերը միշտ հլու է իր տիրոջ. նա խոնարհում է գլուխը, երբ իր աղան խփում է նրան: Վարուիր, ինչպէս զինուորներդ են, այդ է պահանջում կարգապահութիւնը. հա՛, հա՛, հա՛...

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

Միայն մահը կարող է ստիպել ինձ այդ ցած դերը կատարել:

Բ Ա Ջ Ի Լ Ի Դ:

Ի՞նչպէս չէ: Ո՛հ, ես լաւ եմ ճանաչում զտարիւն

նոյնպէս հպարտութիւնը, որ խթանից միայն գիտէ տաքանալ...

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

Բայց ի՞նչ է Իբրահիմի պահանջածը:

Բ Ա Ջ Ի Լ Ի Դ:

Նա պահանջում է, որ այս գիշեր դու միայնակ սպասես փաշային Հռովմէական կամարի տակ, ուղեցոյցի փոխարէն... Իսկ վաղը կը թագաւորես Վեդդի-նում: Համաձայն ե՞ս:

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

(Մի կողմ): Երեւի հասել է իմ օրհասի ժամը... Ո՛հ, հեռացէ՛ք ինձնից, խղճի խայթոց եւ դուք, իմ ընկած գինուորների արիւնաթաթախ ուրուականներ...

Բ Ա Ջ Ի Լ Ի Դ:

Ասա՛... համաձայն ես դու:

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

(Մի կողմ): Լռէ՛ք յաւիտեան, ո՛վ իմ անցեալ փառքի սուրբ յիշատակներ, մնա՛ք բարեաւ եւ դուք, յաղթական գէնքեր եւ սուրբ դրօշակներ, որ միակ Վկաներն էք իմ անցեալ խորտակուած փառքիս... Ո՛հ, մի սարսափէ՛ք...

Բ Ա Ջ Ի Լ Ի Դ:

Վերջապէս ասա՛, համաձայն ե՞ս:

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

(Բարձր): Դու այդ ցանկանում ես...

Բ Ա Ջ Ի Լ Ի Դ:

Այո՛, այո՛, ես այդ կամենում եմ, որովհետեւ սիրում եմ քեզ: Ծանաչելով քո սիրտը, ես այդ ցանկանում եմ, որովհետեւ տեսնում եմ ես այնտեղ թագնուած իղձդ... գիշերները երազումդ դու շարունակ նոյնն ես մրմնջում... Այո՛, ես այդ կամենում եմ, եւ այդ քո բաղդաւորութեան համար, ով իմ սիրելի... Վերջապէս մի՞թէ քեզ չի ձանձրացնիլ այս սարսափելի կեանքը, ուր մեր երկուսիս բուն տենչանքը, երկու դանակների պէս իրար շփուելով, սրվում են, մաշում մեր սէրը, դաճնացնում մեր համբոյրները... Ես կշտացել եմ այդ կեանքից եւ գուցէ մի օր էլ հարուածը կատարեալ լինի...— Զգուշացիր, մեր սէրը ատելութեան կարող է փոխուել, իսկ այն ժամանակ ես քեզ կատեմ 'ի բոլոր սրտէ, խոյս տալով ընդ միշտ քո գրկից... Միքայէլ, կատարիր կնոջդ ցանկութիւնը եւ հաւատա՛ նորան, նոյն իսկ եթէ յանցաւոր է պատուասիրութիւնը, սակայն ո՞վ է կրժում այսպէս գիշատիչի նման մեր սիրտը... Այդ յանցանքը գործիր, միայն թէ մեր սէրը փրկուի... Իմացի՛ր, որ, երբ սէրը յանցանքով է կռած, բունն է գգուանքը, հրապոյրը զեզուն, համբոյրները ջերմ: Անդորր գիշերուայ խանդարուած քունդ իմ կրճի բաբախումը քաղցր օրօրի նման կը մեղմացնէ: Եւ վերջապէս ինչո՞ւ մտածել, որ մենք յանցանք ենք գործում: Զէ՞ որ դու ցանկանում ես ձեռք բերել այն դահլ, որ իսկապէս քեզ է պատկանում, եւ դորանով ուզում ես

պատժել ապերախտ ժողովրդին... Ի՞նչ վնաս, եթէ որ եւ է մի մինարէթ կը բարձրանայ եւ քանի մի քսակ ոսկի կը վճարուի... Նախ թագաւոր եղիր, ապա՝ թող փայլի տաղանդդ... Գուցէ թէ դու քո հանձարով կարողանաս միացնել սլաւոնական բաժան բաժան եղած երկիրները, ոգեւորուելով ժողովուրդը հտեւիցդ քարշ տաս թշնամու հանդէպ, եւ, քչելով տաճկին, ինքդ սրբերի կարգը դասուես, Միքայէլ հրեշտակապետի նման... Բայց ի՞նչ եմ ասում, ապագան հեռու չէ շատ Տուր ինձ ձեռքդ, նայիր աչքերիս, ես ո՞ւմ կին եմ՝ հերոսի՞ թէ ստրկի... Իմացիր, Միքայէլ, թէ դու ի՞նչ ես ցանկանում եւ քեզ ի՞նչ են առաջարկում... Գահ, արքայական իշխանութիւն եւ ոսկի անրաւ, այժմ քեզնից է կախուած ընդունել թէ մերժել բոլորը... Եւ լաւ իմացիր, եթէ չը համաձայնես, ես անձնասպանութեան կը դիմեմ:

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

Ո՞հ երկիրք...

Բ Ա Ջ Ի Լ Ի Դ:

Եւ ես քեզ կապացուցանեմ, լսո՞ւմ ես, Միքայէլ, որ կնոջ սիրտը աւելի զօրեղ է... Լաւ լսիր, ես կատակ չեմ անում: Իմացի՛ր, որ, երբ կինը նախագծեց, կիրաւ գործէ... անպատճառ: Այս ձեռներովս կը խեղդեմ ինձ, նոյն իսկ իմ ծամերովս...

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

Բաւական է, ես համաձայն եմ, բաւական է: Երդ՝ վում եմ, որ վճռեցի քո հտեւից գալ ամենուրեք: Բա-

զիլիդ, ես ուրախութեամբ սրբապղծութիւն, յանցանք կը գործեմ, որ քեզ համար գահ ձեռք բերեմ: (Բազիկիդը թռնում է նրա ձեռքից, ցոյց է տալիս դէպի դուռը, ուր սպասում է եգիպտացիները):

Բ Ա Ջ Ի Լ Ի Դ :

Արի՛...

ՏԵՍԱՐԱՆ ԵՕԹՆԵՐՈՐԴ

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

(Դուրս է գալիս քաղսից սասիկ յուզուած).  
Հայրս դաւաճանո՞ւմ է... եւ ես այդ գիտեմ... Ի՞նչ անել...

(Վարագոյր)

## ԵՐՐՈՐԴ ԳՈՐԾՈՂՈՒԹԻՒՆ

Լեռնային մի սափաւակ Բաղիաններուն: Բեմի մէջստեղծ Տրայանոսի յաղթական կամարի աւերակները, զինուորական ֆանդականկարների հետքերով: Բեմը միջից կտրելով, անցնում է կամարի սակով Հոովմեական խնուղին, տեղ տեղ ֆանդուած սաղերով: Դեպ աջ ցախերից կազմուած մի խարոյկ, որին մօտիկ գետնի վրայ դրած է վառած շապտերը: Ժայռեր եղեւնու քփերով, հեռուն լեռնաշղթայ ձիւնապատ գագաթներով: Աստեղայից զիշեր է:

### ՏԵՍԱՐԱՆ ԱՌԱՋԻՆ

ՊԱՀԱՊԱՆ, ապա ՀՈՎԻԻ

Պ Ա Հ Ա Պ Ա Ն:

(Նայում է ուրսաղիայ ժանսցոյցին): Ժամի տամնու-  
մէկն է արդէն... չիջենք ժամացոյցը (չրջում է): Ինչպէս  
տեսնում եմ, ինձ, երեւի, բոլորովին մոռացել են:  
Սովորաբար ինձ փոխարինող պահապանը փոքր ինչ էլ  
վաղ է գալիս... իսկ ցուրտն էլ քանի գնում սաստկա-  
նում է... Այս գիշեր, անկասկած, սառնամանիք կը լինի.  
(նկատելով ժայռի զղխին հովուին): Է՛յ, այդ ո՞վ է այդ-  
տեղ... Այդ դո՞ւ ես, հովիւ:

Հ Ո Վ Ի Ի:

Բարի երեկոյ, Սանդոր:

Պ Ա Հ Ա Պ Ա Ն:

Բարի երեկոյ, Ջօհան, ի՞նչպէս ես:

Հ Ո Վ Ի Ի:

Դո՞ւ ես պահակը հսկում:

Պ Ա Հ Ա Պ Ա Ն:

Անհամբեր սպասում եմ, որ գան ինձ փոխարինե-  
լու, բարկութիւնից քիչ է մնում ճաքեմ, որ այսպէս  
ուշանում են, ցուրտ քամին էլ մարդու ոսկորների ծուծն է  
անցնում. իսկ դու ինչո՞ւ թողել ես հօտդ...

Հ Ո Վ Ի Ի:

Հաւատարիմ չունս հսկում է նրանց... ես վտակը  
ջրի էի գնացել:

Պ Ա Հ Ա Պ Ա Ն:

Իսկ եւ իսկ ես միեւնոյն դերն եմ կատարում,  
ինչ քո շունը. ցերեկը քնիր, իսկ գիշերները ականջներդ  
սրիր եւ աչքերդ չորս բաց արած հսկիր: Ինչպէս տես-  
նում ես, ոչ մի տարբերութիւն իմ եւ քո շան մէջ:

Հ Ո Վ Ի Ի

Այդ ուղիղ է: Տաճիկը գայն է, դու շունը, իսկ  
Միքայէլը հովիւ... Բայդ նա շատ լաւ հովիւ է, մեղ  
լաւ է պաշտպանում: Շատ քաջ մարդ է, մինչեւ անգամ

քնած ժամանակն էլ ղէնքը ձեռքիցն բաց չի թող-  
նում... Ի՞նչ կը լինէր մեր օրը, եթէ այս պատերազմա-  
կան խարոյկները չը լինէին... Ա՛հ, նա շատ լաւ իշխան է...

Պ Ա Հ Ա Պ Ա Ն:

Ի հարկէ՛, հապա էլ ինչո՞ւ է մեծ Բրանկօմիր կոչ-  
ւում, եթէ այդպէս չը լինի... Է՛հ, ինչո՞ւ այսպէս ուշա-  
նում են, ինչո՞ւ չեն գալիս ինձ փոխարինելու... Ո՛հ,  
գժուար է երեք օր մենակ հերթապահ լինելը...

Հ Ո Վ Ի Ի:

Իմ վիճակը աւելի վատթար է, Սանդօր... Դու  
գոնէ այսօր կ'ընթերես ու մի կուշտ էլ կը քնես տաք  
անկողնումդ, բայց ես ամբողջ ամառը մեն մենակ այս-  
տեղ ոչխարներին հետն եմ եւ միակ ընկերս շուշն է մի-  
այն, իսկ մարդի երես չեմ տեսնում: Անցեալները քիչ  
էր մնում առանց հաղորդութեան մեռնեմ... Է՛հ, երեւի  
Աստուծոյ կամքն է, մենք ի՞նչ կարող ենք անել...  
Մնաս բարեա՛ւ...

Պ Ա Հ Ա Պ Ա Ն:

Գնաս բարեաւ:

ՏԵՍԱՐԱՆ ԵՐԵՐՈՐԴ

ՊԱՀԱՊԱՆ (միայնակ)

Պ Ա Հ Ա Պ Ա Ն:

Այս անիծեալ ցուրտն էլ մինչ ոսկորներին ուղեղն  
է թափանցում, արիւնս սառցնում: Այս ի՞նչ չը տես-

նուած բացառիկ փայլով են լուսաւորում այս գիշեր  
աստղերը, կարծես վկաներ լինին իրանց անթարթ աչ-  
քերով երկրին դիտում: Ես յիշում եմ, ինչպէս հանգու-  
ցեալ մայրս կասէր, թէ աստղերը, որ այնպէս պայծառ  
լողում են կապոյտ երկնքում, աշխարհի սկզբից, իբր  
լուռ վկաններ տեսնում են բոլորը, ինչ կատարվում է  
աշխարհիս երեսին, եւ վերջին դատաստանի օրը նրանք  
կը յայտնեն բոլոր գաղտնի կատարուած յանցանքները:  
Ինձ այնպէս է թւում, մի տեսակ նախազգացմունք  
կասես թէ ինձ թեկադրում է, որ այս գիշերուայ մթու-  
թեան մէջ մի ինչ որ ոճիր է պատրաստվում... Ո՛հ,  
միայնակութիւնը ինչ կասկածոտ է դարձնում մարդու...  
Բայց ի՞նչ յարօրինակ փայլ ունին այս գիշեր աստղերը...  
Է՛հ, ինչ դատարկ բաների մասին եմ մտածում... Հիւսի-  
սային քամին է նրանց այնպիսի փայլ տալիս եւ ուրիշ  
օր ասելիս, որ ես քնեմ... (Միփայեղ Բրանկօմիրը երե-  
ւում է խորից սրահսպանի գլխարկ եւ վերաւիճւ ծած-  
կած): Անշուշտ ինձ փոխարինող պապապանն է այն եկողը

ՏԵՍԱՐԱՆ ԵՐԵՐՈՐԴ

ՄԻՔԱՅԷԼ ԵՒ ՊԱՀԱՊԱՆ

Պ Ա Հ Ա Պ Ա Ն:

Է՛հ, այդ ո՞վ է այդտեղ:

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

Բարեկամ:

Պ Ա Հ Ա Պ Ա Ն:

Գիշերուայ պայմանական խօսքը:

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

Բակուլա:

Պ Ա Հ Ա Պ Ա Ն:

Երեք օրուայ համար պահակը քեզ եմ յանձնում:  
Պաշար ունի՞ս:

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

Այո՛

Պ Ա Հ Ա Պ Ա Ն:

Որքան յիշում եմ, բարեկամ, ինձ այնպէս է թւում,  
որ քեզ առաջին անգամն եմ տեսնում:

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

Շատ պարզ է: Ես նոր եմ վերադարձել Էդրօպօլի  
պահակից:

Պ Ա Հ Ա Պ Ա Ն:

Գիտե՞ս, պէտք է անթարթ աչքերով, անդուլ հսկել:

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

Գիտեմ:

Պ Ա Հ Ա Պ Ա Ն:

Իսկ շրջակայքին լաւ ծանօթ ես:

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

Ես այստեղ եմ ծնունդ:

Պ Ա Հ Ա Պ Ա Ն:

Այս գիշերուայ հերթական խօսքը:

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

Ուրօշը յայտնեց, յաջորդս ինձ այդ կասէ:

Պ Ա Հ Ա Պ Ա Ն:

Է՛հ, ուրեմն ամեն ինչ կարգին է, դէ՛հ, ցտեսու  
թիւն: (Պահապանը գնում է):

### ՏԵՍԱՐԱՆ ՁՈՐՈՐԴ

ՄԻՔԱՅԷԼ (միայնակ)

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

Ես երգուեցի, խօսք տուի... Հասել է սարսափելի  
վայրկեանը, Միքայէլ, եւ քեզ այժմ մնում է խոստումդ  
կատարել: Ի՞նչ խաղաղութիւն է տիրում շուրջս. միայն  
վտակի մրմունջն է խախտում այս խորհրդաւոր լուս-  
թիւնը: Օթարգիւլը չուտով կը դայ, հեռու չէ նա... Եւ  
ես չուտով կը լսեմ հոտմէական խճուղու վրայ նրա

ձիու ոտների տրոփիւնը, ու Դակիացիներին յաղթող Տրայանոսի կամարի տակ կը հանդիպեմ նախկին թըշնամուս... Ի՞նչ փոյթ, ես պատրաստ եմ ամենաստոր ոճիւրը գործելու, միայն թէ կրկին քո գիրկը ընկնեմ, Բազիլիդ, քո սիրատապ գիրկը, որ կարողացաւ խղճիս ձայնը խեղդել... Այո՛, ես համբուրեցի քո այդ ձեռները, որոնք ինձ դէպ ոճիր են մղում... Ի՞նչ արած, ես սիրում եմ քեզ այնպիսի մի սիրով, որ ուրախ եմ այդ սիրոյդ համար հրէշաւոր ոճրագործ լինելու, եւ քանի դու այդ պահանջում ես, կասկած չը կայ, որ անպայման ես կը կատարեմ: Ես, երգուեցի քեզ, քո քաղցր եւ անուշ շունչդ շնչելով... Նոյն խակ եթէ տաճկի փոխարէն ինքը սատանան իր նենգ ժպիտով գար ինձ առաջարկելու դժոխքի բոցերում շիկացած թագը, ես այն քեզ կը բերեմ իմ ածխացած ձեռներովս... Ո՛հ, ես չեմ վախենում քեզից, աստղազարդ գիշեր, կարող ես դու վկայ լինել...

# ՏԵՄԱՐԱՆ ՀԻՆԳԵՐՈՐԴ

ՄԻՔԱՅԷԼ ԵՒ ԿՈՍՏԱՆԴԻՆ

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

(Նկատելով ժայռերի միջից դուրս գալիս Կոստանդինին): Երա՞զ է, ինչ է, մի մարդ այս ժայռի մօտ (բարձր, բարկացած): Է՛հէ, այդ ո՞վ ես այդտեղ, թափառաչքով, չը գիտե՞ս, որ խստիւ արգելուած է մօտենալ: Շուտ հեռացի՛ր այդտեղից, թէ չէ տեղն ու տեղը կը մեկնեմ: Հրամանը խիստ է, կորի՛ր...

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

(Մօսկեացի): Հանգստացէ՛ք, հա՛յր, այս ես եմ...

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

Կոստանդին... Որդի՛ս...

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Այո՛:

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

Ասա՛, ի՞նչը քեզ դրդեց այս ժամիս այստեղ գալու... Ի՞նչու դէմքդ դունատ է այդպէս... ձէնդ դողում: Եկել ես ի՞նչ անեա այստեղ:

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Իսկ դո՞ւք, դուք ի՞նչ էք անում այստեղ:

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

Համբերութիւնից մի հանիլ ինձ, ասա՛, ինչո՞ւ ես եկել, ի՞նչ գործ ունիս այստեղ:

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Սրբազան պարաքս կատարելու... ես բոլորը գիտեմ:

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

Դու գիտե՞ս բոլորը...

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Այո՛, գիտեմ, թէ Բալկաններին ինչ վտանգ է սպառնում... Տաճիկները դալով, ալեւոր լեռները կը

ծածկեն իրանց զէնքերի շաշխնով, որովհետեւ պահա-  
կում հաւատարիմ մարդ չը կայ։ Ես եկել եմ, հայր, այս  
գիշեր ազատելու Քրիստոնէի երկիրը, պատիւդ եւ թէ  
խիղճդ պարզերես դարձնելու հոգուդ առջեւ։ Ես եկել  
եմ խարոյկը կրակեմ նոյն իսկ կամքիդ հակառակ։

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

(Մի կողմ)։ Ինքը սատանան որդուս գիմակով ու-  
ղում է ինձ խոչնդոտ լինել... (բարձր)։ Անմիտ պատանի,  
ո՞վ այդ կասկածը ձգեց սիրտդ։

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Հա՛յր, հեռացրէ՛ք ձեզնից ստախոսութեան ամօթը։  
Դու այստեղ սպասում ես տաճկին, որ քեզ դահ է խոս-  
տացել... Ես գիտեմ բոլորը, կրկնում եմ, ես անձամբ  
բոլորը լսեցի։

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

Դժո՛խք ու անէ՛ծք։

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Ո՛հ, ո՛չ, հայր իմ... այդ անկարելի է... Ո՛հ, ես  
սխալուած եմ, տեսածս սարսափելի երազ էր, ես  
կոբրել եմ խելքս... Իրաւունք ունէ՛ք, հայր... Երբ  
դուք ասացիք, որ պատրաստ էք դաւաճանութեան, այդ  
լուկ նրա համար էր, որ փորձէք այն կնոջ... Այնպէս չէ,  
հայր... Գիշերուայ մթնում նորա տուած համբոյրը խայ-  
տառակ ուխտի դուք սրբեցիք ձեր ձեռներով։ Ես հաու-  
կանում եմ, այդ մի խորամանկ միջոց էր, մի կեղծ հը-  
նարք, ի սէր հայրենիքի եւ սուրբ պատերազմի, որ մի

վայրկեան դուք առ երես զիմակ ծածկելով եկաք այս-  
տեղ կռուի նշանը տալու... Եւ մենք՝ Օթարգիւլ փա-  
շային ծուղակում բռնած՝ մի լաւ կը ջարդենք։ Բալկան-  
ները կը սլակուէին կռուի խարոյկների պլպլացող բոցե-  
րով, որոնք կը տարածուէին Իսկանդրից մինչ Կիլանդրիա,  
եւ այն ժամանակ ես ուշքի կը գամ իմ սարսափելի դա-  
ռանցանքից... կպցրու խարոյկը, հայր, թող նա պլպլա-  
յրոցալառուելով...

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

Որդիս ինձ կասկածում է դաւաճանութեան մէջ...  
Որպիսի՛ խայտառակ անպատուութիւն... իմ անուանս  
ժառանգը համարձակում է ինձ հարց տալու՝ ես դաւա-  
ճա՞ն եմ թէ ոչ... Իսկ այդ մինչ ե՛րբ կը տեսի, որ  
հայրը տանի, որդուն նկատելով դռան ձեղքերից լրտեսելը...  
Վաղո՞ւց է, որ ես քեզնից խորհուրդ եմ հարցնում, այդ ե՛րբ  
է տեսնուած, որ զօրավարը հպատակէ իր ղընուորին... Ես  
է անսուած, որ դժբախտ պատասխանելու... Դու մո-  
քեզ արժան չեմ համարում պատասխանելու... Դու մո-  
ռա՞ցել ես, որ յօնքերիս թեթեւ շարժումը օրէնք է հա-  
մարլում... Արդ, ես ջանկանում եմ այս գիշեր այստեղ  
մննակ լինել, լսո՞ւմ ես. իսկ դու անյապաղ դղեակ կը  
վերադառնաս ամենահարթ ճանապարհով։ Ես այդպէս  
եմ կամենում. շո՛ւտ իսկ խարոյկը յետոյ կը կրակեմ,  
եթէ յարմար դատեմ։ Ես հայրենիքի լաւ ու վատը  
աւելի լաւ գիտեմ ո՛րն է։ Հրամայում եմ իսկոյն դղեակ  
վերադառնալ, հնազանդուի՛ր։

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Ուրեմն տեսածս ստոր երազ չէ՞ր, այլ իրականու-

թիւն... Դաւաճանութիւնը մօտ է իրագոծուելուն... Եթէ այդպէս է, ապա ես մնում եմ:

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

Դու համարձակվում ես...

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Ա՛հ, հայր իմ, բարկութիւնդ այլ եւս ինձ չի սարսափեցնում, որովհետեւ դէպ քեզ ունեցած սիրոյս վերջին կայծը, որ դեռ կայ ինձնում, ստիպեց ինձ գալ այստեղ եւ կանգնել ոճիրի եւ քո մէջտեղ... Հեռո՛ւ ինձնից, որդիական սէր եւ յաղթական զօրավարիս յարգանք... Այժմ միմիայն մի իղձ ունիմ սրտումս... Ազատել հայրենիքս սպառնող թշուառութիւնների վտանգից եւ հօրս պատիւը խայտառակ ամօթից, որովհետեւ Աստծուն ես հաշիւ եմ տալու... Պէտք է, որ կրակը խկոյն բոցավառէ լեռներում եղած բոլոր խարոյկները. հեռո՛ւ, մի կողմ, ես պէտք է այդ ջահը վերցնեմ եւ կրակը նետեմ...

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

Երբէ՛ք:

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Մտածէք, հայր, խելքի եկէք, զգուշացնում եմ ձեզ: Հայր Աստուած տեսնում է վերելից, իսկ այդ աստեղազարդ երկնակամարը վկայ է նորան... Երբ ես տեղեկացայ բոլորը, հարց տուի ինքս ինձ, ի՞նչ պէտք է անեմ, ի՞նչ է իմ պարտականութիւնը: Այդ շատ պարզ էր, աւա՛ղ... Հրապարակ հանել ստոր եղելութիւնը, մատնել

քեզ, այո՛, հայր, եւ քո խայտառակ կնոջը արդարադատութեան, դիմակը առնել այդ լիբր տաճկից... Իսկ ձեզ համար, ո՛վ թշուա՛ռ, այդ մահ կը լինէր, սարսափելի մի մահ... Այդ կը նշանակէր, որ երկար տարիների ընթացքում յաղթանակներով ձեռք բերած անունդ, փառքդ, պատիւդ, բոլո՛րը, բոլո՛րը մի ակնթարթում յաւիտեան խորտակել եւ նախատինքով ծածկել... Ես պարզ տեսնում էի ամօթալի կախաղանը. Հայրասպան լինելու դժնդակ վարմունքը ինձ սարսափեցրեց եւ ես անկարող եղայ քեզ մատնելու: Ո՛հ, ո՛չ, ես չը կամեցայ, որ փառաւոր անունդ, ինչպէս ծառից վայր ընկած թարչամած տերեւ, ոսոնատակ ընկնի, եւ որ մի օր ամեն մի անցորդ չիրիմիդ մօտից անցնելիս՝ վրան թուք ու մուր թափէ... Եւ ես լռեցի: Կեղեքուած սրտով մինչ վերջին րոպէն ես մաքառում էի խղճիս դէմ. սակայն իզո՛ւր... Բայց այժմ, հայր, ես պէտք է իրագործեմ, որովհետեւ ժամանակը անցնում է... Ես վճռել եմ հաստատ վառել խարոյկը... Դէ՛հ, մի կողմ, տեղ տուր ինձ, երկնչիւր վերելից, հայրենիքդ խղճա՛. Յիշիր, որ լռութիւնովս ես ազատեցի քեզ սարսափելի տանջանքներից եւ մահուան անարգ սիւնից... Եթէ չը լինէի ես, դու այժմ կը կրէիր շղթայիդ ծանրութիւնը, զգալով դահճի բարձրացրած ձեռքի ոյժը... Հայր, մի ստիպիլ ինձ լռութիւնս ափսոսալու...

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

Շատ ուշ է այժմ: Ափսո՛ս, որ ազատեցիր կեանքս, օրինակելի որդեակ: Դու իդուր չը լռեցիր խղճիդ ձայնին, եւ բոլորը չը յայտնեցիր, որպէս զի ստոր Յուդայի պէս տեսնես, ինչպէ՛ս իմ զինուորները քո աչքի առաջ կը

նահատակեն ինձ... Աւելի վատ քեզ համար Դու չանսացիր սրտիդ թեւադրութեան. իսկ ես իրագործում եմ իսկոյն այն, ինչ յղանում է խմբ. Ո՛վ ընդունակ չէ նախատեսելու, նա անկարող է եւ արգելք լինել. ես ոչոքի թոյլ չեմ տալ մօտենալ անգամ այդ խարոյկին...

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Եւ դուք, անտէր թողնելով ձեր նախնական անցքը միջոց կը տաք տաճիկներին տիրելու ամբողջ Եւրոպային—քրիստոնեաների երկրին...

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

Նրանք երախտամոռ գտնուեցան դէպ ինձ...

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Իսկ Աստուած...

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

Իսկ Աստուած մի՞թէ ինձ թագաւոր դարձրեց... Հակառակ նորան, ես այժմ ուզում եմ թագաւոր լինել եւ ես կը լինեմ...

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Գուցէ... բայց ինքնակոչի թագը շատ մեծ է գըլխոյլ: Յանկարծ կարող է ընկնել, թագաւորդ Բալկաններին, եւ իր երկաթեայ օղակովը խեղդել պարանոցդ...

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

Լոխր, յանդուգն. համարձակո՞ւմ ես անպատուել հօրդ...

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Իրաւունք ունիս... Ես մեղաւոր եմ... Ներիր, ես չեմ հասկանում իմ ասածները... Ո՛հ, ես ձեզ եմ դիմում, ձեր օգնութեան, հօրս դուք անցեալ փառաւոր յաղթութիւնների երջանիկ օրեր... զինուորական տօնախմբութիւններ, ժողովրդի ցնծութեան աղաղակներ, եւ դուք, թշնամուց խլուած դրօշակներ... Յիշէ՛ք ալեւոր Բալկանների հզօր պաշտպանին, թէ ինչպէ՞ս էր նա պատերազմի դաշտում իր ամբողջ զօրքի առաջ վիրաւոր որդու տաք վէրքը լիզո՞ւմ... Ո՛հ, ձեզ եմ դիմում, ձեր օգնութեան, զիւցաղնական յաղթութիւնների դուք անցեալ յիշատակներ, կանգնէք ձեր երկար շարքով հօրս հանդէպ եւ զարթեցրէք նրա կրծքի ազնւութեան մարած կայծը... Թող որ նա կարմրի իր ստոր գործից... Ասացէ՛ք նորան, որ վաղը պալատից կախուած սլաւօնական դրօշակները, երբ նա իրր թագաւոր Վեդդին մտնէ, կ'ապտակեն նորան... Ո՛հ, յիշեցրէք նախնի հերոսին կոուի մէջ կորցրած իր զինուորներին, որոնք զգալով գերեզմանի խորքից իրանց քաջ զօրավարի դաւաճանութիւնը, բողոք են բարձրացնում... Եւ այդ բողոքը գիշերուան մթնում արբազանք տալով՝ ահ եւ սարսափ է ձգում անցորդի սիրտը... Ո՛հ ո՛չ, ո՛չ, հա՛յր, դու անկարող ես չարագործ լինել Դու կը մոռանաս բոլորը եւ չես ցանկանալ մի անուն թողնել, բոլորից անիծուած եւ մասնիչի անուն... Քո անցեալը իր փառաւոր յաղթութիւններով ինձ հետ միացած՝ աղաչում ենք քեզ, այստեղ առաջդ չոգած—դարձեալ հերոս մնա՛, եղի՛ր, ինչ առաջ. Մի՞թէ դու այդ բոլորը մի կողմը կը նետես. ինչպէս մի անառակ կնոջ, այդ բոլորը, որոնց հոչակը անմահ կը մնայ սլաւօնների երկրում:

ո՛հ, հայր, դու այդ աստիճանն ստորանալ չես կարող... Այդչափ ստոր լինել դու ընդունակ չես, հայր... Ոտնե-  
րդք ընկած ես ազաչում եմ, ես հաւատում եմ, ես դեռ  
յոյս ունեմ վերստին ձեռք բերել հօրս, քաջ Բրանկոմի-  
րին... Դու կը կրակես այդ պատերազմի նշան՝ խարոյկը,  
եւ կրժքիդ միջից դուրս կորզելով անիծեալ խոստումդ՝  
կրակը կը նետես, ուղիղ այնպէս, ինչպէս մի ժանտաբոյս,  
որին արմատախիլ են անում եւ կրակի բոցը նետում... Ո՛հ  
դուք մաքուր կը մնաք, իսկ գիշերուայ քամին սարսա-  
փելի երազս իր թեւերի վրայ առած, կը տարածի խա-  
րոյկների բոցերի մէջ...

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

Բաւակա՛ն է, վեր կաց, որովհետեւ երգվում եմ  
նոյն իսկ դժոխքով, որ ես թաղաւոր կը լինեմ լեռնե-  
րում եւ թէ հովտում, կը տամ կնոջս թագը եւ վրէժ  
կառնեմ եպիսկոպոսից... Եւ այս այնքան հաստատ է,  
որքան հաստատ է, որ այդ տատղերը վալլում են երկն-  
քում, իսկ քո խօսքերդ կը մնան ձայն բարբառոյ յանա-  
պատի... Աւելի շուտ դու կարող ես առիւծի ճիրաննե-  
րից նրա որսը խլել... Իզո՛ւր են բոլորովին աղերսանք,  
յորդոր եւ երկիւղ... Իմացի՛ր, որ, չը նայած քո երեխա-  
յական սպանալիքներիդ, ես թոյլ չեմ տալ, քանի դեռ  
կենդանի եմ, այդ խարոյկը կրակելու:

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Քանի դեռ կենդանի՞ես... Ո՛հ, այս ի՞նչ ասացիր,  
հայր... քանի դեռ կենդանի՞ես... Ո՛հ, այս ի՞նչ արիւնալի  
եւ սարսափելի միտք յղացաւ սրտումս... Ես սարսա-  
փում եմ...

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

Ես քեզ չեմ հասկանում... կը ցանկայի՞ր դու իմ  
մահը տեսնել:

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Ես այն եմ մտածում, որ դու, միեւնոյն է, պէտք է  
մեռնես, սակայն խայտառակ դաւաճանի մահուամբ...

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

Ինչպէ՞ս...

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Եւ ես գիտեմ, որ այս բոպէիս, մինչ մենք խօ-  
սում ենք, Օթարգիւլը իր տաճիկներով կոխում է մեր  
հովիտը, եւ թէ իւրաքանչիւր կորցրած վայրկեանը ինձ  
էլ քեզ հետ մեղսակից է դարձնում... ուստի մտածում  
եմ սրբազան պարտականութիւնս կատարելու:

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

Ի՞նչ պարտականութիւն...

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Այն, որ շատ ապօրինի եմ ես վարուել քեզ ազա-  
տելով արդար դատաստանից, այն, որ դահճի սրից քո  
ազատուած գոյութիւնդ մի դժբաղդութիւն է ամենքի  
համար... բայց փոյթ չէ, սուրս ինձ հե՛տ է...

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

Դո՛ւ, քո սրո՞վդ:

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Այո՛, իմ սրովս, որ դեռ կոյս է նախատինքից, որ երբեմն կեանքդ մահուան ճանկերից կորզեց: Նայի՛ր, վէրքերիս հետքերը դեռ երեւում են ճակատիս վրայ... Բայց այժմ, որովհետեւ անարգ փառքի ստոր ձգտումները Բայց այժմ, որովհետեւ անարգ փառքի ստոր ձգտումները կին հերոսը ամբողջ Բալկանների, այժմ բոլորից անարգանք կրելով, գնում է տաճկից դաւաճանութեամբ թագ մուրալու... Ա՛րդ, իմ անարատ սուրս վրէժխնդրութեան փայլով շողշողելով, ինձ հրամայում է, հէնց այս րոպէիս տեղն ու տեղը լինել դաւաճանի անհղ դատաւորը եւ թէ անգութ դահիճը... (Հանում է սուրը պատեանից):

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

(Քաշեղով պատեանից նոյնպէս իր սուրը) Ես էլ իմ սուրը ունեմ, քոնից ոչ պակաս...

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Ես պաշտպանում եմ իմ հայրենիքը, ամբողջ քրիստոնեայ Եւրոպան, զինուորիս պարտքը եւ տոհմիս անունը... Իսկ դո՛ւք, դո՛ւք կռւում էք յանո՛ւն դաւաճանութեան... Աստուած վկայ է, թող Նա ինքը դատէ վերեւից երկուսիս էլ... մահ՛ դաւաճանին: (Կոստանդինը յարձակվում է հօր վրայ, նրանց սրերը իրար են հանդիպում մի առ ժառանգակ, սպա Միխայիլը հարուած ստանալով կրծքից՝ վայր է ընկնում):

Մ Ի Ք Ա Յ Է Լ:

Ա՛հ...

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Աստուած իմ, այս ի՞նչ դողձեցի ես:

Մ Ի Լ Ի Յ Ա:

Այդ կերպ մի խօսիլ, տէր իմ Ինձ համար դու գեղեցիկ ես բոլորից, բարի եւ սիրուն, որովհետեւ միայն քեզ եմ ես սիրում... քո աչքերդ ինձ համար նոյն իսկ երկինքն է...

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Սիրենք ուրեմն իրար փոխադարձաբար, ե՛կ, մօտեցիր, գրկիր, սեղմուիր այս կեղեքուած կրծքիս, որ քեզ կը մխիթարէ, միասին ընթանանք դժուարին ուղին, ես, որ արհաւիրքների մէջ եմ լոկ ապրել, իսկ դու, որ միայն ամօթն ես ճանաչել... Սիրենք իրար, բայց ապացուցանենք մեր ծրող սիրով, որ մենք երկուսս էլ ստեղծուած էինք անարատ լինելու, ցոյց տանք բոլորին էլ, թէ որքան բարձր են եղել մեր հոգիները: Սիրենք իրար, սակայն եղիր լոկ իմ նշանածը ճաշակիր դու էլ քաղցր համրոյրը, ճակատիդ դրոշմուող, եւ մնանք անարատ մեզ վերից զիտող երկնակամարի տակ: Ես սաստիկ տանջվում եմ, մահը չուտով ինձ վրայ կը հասնի. նա իր թեւերը տարածել է արդէն վրաս. եթէ կը հետեւես դու ինձ, անարատ մտենք երկնքի արքայութիւնը: Սիրելի էակ, թոյլ տուր զժբաղդիս, որ սիրում է քեզ, չաղ տալ այժմ վրադ, մկրտութեան ջրի տեղ, այս ծաղիկները, եւ քո սիրով ինձ տուած ծաղիկները, քեզ մաքրելով, թող լինի մեր նշանադրութեան միակ ծէսը: (Շաղ է ցալիս նրա վրայ ծաղիկները):

**ՏԵՍԱՐԱՆ ԶՈՐՐՈՐԴ**

**ԿՈՍՏԱՆԴԻՆ, ՄԻԼԻՅԱ ԵՆ ՄԱՆԿԼԱԽԻԿ:**

**Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:**

(Դեպ մտնող մանկաշիկը): Ի՞նչ էս կամենում:

**Մ Ա Ն Կ Լ Ա Ի Ի Կ:**

Տէր, իշխանուհի Բաղիլիդան ձեզ հետ տեսութիւն է ինդրում խօսելու:

**Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:**

(Մի կողմ): Չարաննդ կի՞նը, որ մեր թշուառութիւնները միակ պատճառն է... Ո՛հ, տեսնե՛լ նորան: Թո՛ղ ինձ, նազելիս: (Միջիցան գնում է): Ես պէտք է նրան ընդունեմ: Անշուշտ էլի նա նոր որեւէ մեքենայութիւն է միտում: Բայց ես հսկում եմ (դառնալով դեպ մանկաշիկը): Ես պատրաստ եմ հօրս այրիին: (Մանկաշիկը ներս է քերում սեւագգես Բաղիլիդին. իսկ ինքը հեռանում):

**ՏԵՍԱՐԱՆ ՀԻՆԴԵՐՈՐԴ**

**ԿՈՍՏԱՆԴԻՆ ԵՆ ԲԱԶԻԼԻԴ**

**Բ Ա Զ Ի Լ Ի Դ:**

(Մի կողմ): Զը պէտք է տատանուել, բաւական է մի անգամ թեքել այս պատանուն, այն ժամանակ շատ հեշտ է նրան քաշել, ո՛ւր կուգես: Փորձենք... եւ այդ իմ միակ յոյսն է, այլապէս մնաք բարեաւ, թագ ու իշխանութեան անյաղ ցանկութիւն...

**Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:**

Ի՞նչ էք կամենում ինձնից:

**Բ Ա Զ Ի Լ Ի Դ:**

Դիտեմ, դու արհամարհում ես ինձ, Կոստանդին: Մեծ Միքայէլի մահուանից ՚ի վեր, չընայած իմ թշուառութեանըս եւ սգուորի անհուն վշտիս, դու խոյս էիր տալիս ինձնից... Սակայն տեսնում ես, այնուամենայնիւ ես անձամբ քեզ մօտ եմ եկել, որովհետեւ պէտք է անմիջապէս դործել. ժամանակը ուշ է, Կոստանդին, դու ինձ ատում ես եւ կարծում, որ ես նոյնպէս եմ վերաբերվում քեզ: Խեղճ որդեակ, սիրող դառնութեամբ լքցուած է իմ դէմ, բայց ես եկել եմ անձամբ ապացուցանելու, որ դու իզուր տեղն ես ինձ մեղադրում:

**Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:**

Դո՞ւք:

**Բ Ա Զ Ի Լ Ի Դ:**

Ես ուզում եմ պաշտպանել հանգուցեալ հերոսի զաւակը... Մեծ Միքայէլի որդուն...

**Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:**

Ինչպէ՞ս:

**Բ Ա Զ Ի Լ Ի Դ:**

Ազատելով քեզ:

**Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:**

Ի՞նչ ազատել... Դո՞ւք...

Բ Ա Ջ Ի Լ Ի Դ:

(Մի կողմ): Այժմ տեղը եկել է համարձակ լինելու: (Բարձր): Իսկ միթէ՞ դու չես նկատում, թէ ինչ վտանգ է քեզ սպառնում: Քո անմիտ համարձակութիւնը եւ կրած պարտութիւններդ դժգոհութիւն են գցել զինուորներդ սիրտը: Այդ յաղթուած չները այժմ սկսել են հաջել իրանց տիրոջ վրայ եւ մեղադրում են քեզ դաւաճանութեան մէջ:

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Ի՞նչ, դաւաճանութեան մէջ:

Բ Ա Ջ Ի Լ Ի Դ:

Եւ դեռ աւելի եւս: Դէպքերն էլ կարծես առիթ են տալիս, լսո՞ւմ ես դու, այդ անարդար կասկածանքներին... Ես եկել եմ յայտնելու քեզ իրողութիւնը... Բալկանները պաշարուած է, արդէն տաճիկները հովտումն են:

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

(Բացակայելով) Ա՛հ...

Բ Ա Ջ Ի Լ Ի Դ:

Լուրը արդէն հասել է բոլորին: Այո՛, տաճիկները էտրօպօլի կողմից անցել են դէպ Բալկանները գիշերը մի անցքով, որ անմերձենալի էր համարվում: Չորս կամ հինգ օրից, այդ սարսափելի է, նրանք արդէն Վեդզինի մօտ կը լինեն: Բաղաքի դռները կը բացուին նրանց առաջեւ. իսկ այն ժամանակ բոլորդ էլ կորած էք...

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Ո՛չ դեռ եւս:

Բ Ա Ջ Ի Լ Ի Դ:

Ստեփանը իր թագի վրայ դողալով, այն թագի, որ այսօր պէտք է քոնը լինէր... յուսահատուած վճռել է իր վերջին ճիգը թափել: Նա այստեղ կը գայ վաղը, եթէ ոչ այս գիշեր կռուի հրաւէր կարդալու...

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

(Շտապում է դէպ խորքի դռներ): Հայրենի՛քս վտանգի մէջ է, ես ուզում եմ կռուել... Ի գէ՛ն, հետեւէք ինձ, իմ քաջ զինուորներ...

Բ Ա Ջ Ի Լ Ի Դ:

Իզուր է հրաւէրդ, քո ապստամբուած զինուորներդ քեզ չեն հպատակի:

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Ո՞վ կը համարձակուի... (Դրսից շտապում է մի խուշ աղմուկ, որ երթումն սասկանում է):

Բ Ա Ջ Ի Լ Ի Դ:

Լսո՞ւմ ես այդ խուշ աղմուկը, Կոստանդին, այդ ամբողջ զօրքն է քեզ մեղադրում, բողոքում է նա. եւ հէնց թագաւորը հասնէ այստեղ, զօրքը նրան կը դիմաւորէ, «դաւաճանութիւն» գոչելով:

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Այդ սարսափելի է:

f u g t l t r:

Տեսնո՞ւմ ես այժմ, որչա՞փ ես ներողամիտ եմ: Դու  
ինձ ատում ես, իսկ ես այս սարսափելի վայրկենիս, ի  
սէր իմ անմոռանալի ամուսնու յիշատակին, եկել եմ փրո-  
կութեան միջոց առաջարկելու թէ քեզ եւ թէ բոլորիս  
համար...

ህ በ ሀ ል ጊ ጥ ኮ ጊ:

Դո՞ւք ինձ փրկութեան միջոց առաջարկելու... Իսկ ի՞նչ կարող եմ ես անել...

ᑭ ᕐ ᕐ ᕐ ᕐ ᕐ ᕐ:

Վերջացնել ա՛յն, ինչ երազում էր հայրդ:

4 0 0 8 0. 6 7 1 6:

$$b^p u:$$

բ Ս զ Ի Լ Ի Դ:

Գիտե՞ս, որ նա Հռոմէական կամարի մօտ սպա-  
սում էր Օթարգիւլին նրան ձեռք մեկնելու...

ᐃ ᐅ ᑭ ᓂ ᖃ ᔨ ᕐ:

(Մի կողմ): Ո՛հ, զարհուրելի՜ յիշողութիւն:

ᑭ ᕐ ᕈ ᑲ ᓴ ᑲ ᑲ:

Լսո՞ւմ ես, Կոստանդիկն, միեւնոյնը այժմ ես քեզ  
եւմ առաջարկում...

ህ ስ ግ ጥ ጥ ጥ:

(Մի կողմ): Երկիրք եւ երկիր:

ᠪ ᠤ ᠵ ᠲ ᠤ ᠪ ᠤ ᠶᠡ

Զինուորյնեդդ ասոււմ են, որ դու դաւաճան ես... այդ դատարկ խօսքեր են... Զը նայած դորան, դու կարող ես փրկել հայրենիքդ եւ նրան վերագարձնել նրոյ երջանկութիւնը եւ խաղաղ օրերը... Քանի դեռ քո ամբողջը չէ առնուած, անհաւատը յաղթող չի կարող համարուիլ... դեռ երէկ միայն ես տեսայ սուլթանի գաղտնի գործակալին: Նա հակուած է դարձեալ բանակցելու եւ պատրաստ է միշտ համաձայնութեան... Մուհամմէդի ֆիրմանը ինձ մօտ է գտնվում, որով նա շնորհում է իր նոր վասսալին գայիսոն եւ թագ: Այստեղ մի բառ անգամ չէ փոխուած, իսկ նրա վրայ հօրդ կնիքն է դրած. այն չէ՞ որ եւ քոնն է... (Հանում ե ծոցից սուրբանի գիրմանը եւ ցոյց տալիս Կոստանդինիին):

У П У С Ь Ы Т Ы:

Բրանկօ Ֆլեների՝ կնիքը... (Նոր աղմուկ դուրսը)

f u g h l t r

Զօրքի արտունջը գնալով աճում է... Երբ թագաւորը դայ, այդ պիղծ խռժանը քեզ կը յայտարարէ իրեւ անարժան զօրավար. իսկ ես քեզ արքայական ծիրանի եւ գահ եմ առաջարկում... Եղիւր աւելի հաստատակամ եւ խոհեմ, քան հայրդ էր: Վճռիր, բաց տաճիկներին անցքերը... իսկ նա, որ քեզ ազատում է այսպիսի մի ճգնաժամում, եւ որին դու արհամարհում ես կոյր կերպով, իբր վարձատրութիւն քեզինց միմիայն խնդրում է ապրել մշտապէս մօտդ, սիրել քեզ եւ իբրեւ մայր, եւ արեւելոյ, նստել արքայական գահիդ ոռնների մօտին... Համաձայն ես, Կոստանդին...

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Խայտառակ... Ա՛հ, այդ արդէն չափից դուրս է... Մոլորվում է խելքս բարկութիւնից: Յանդգնել առաջարկելու ինձ, ինձ նոյն դաւադրութիւնը: Ո՛հ դու անզգամ: Չ'է, ես պէտք է որ վրէժս առնեմ, երեսիդ տալով սրտիս գաղտնիքը...

Բ Ա Ջ Ի Լ Ի Դ:

Ի՞նչ ասացիր...

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Այն, որ ես էլ կանգնած էի նոյնպէս Հոռվմէական կամարի տակ, միայնակ, հօրս զիմացը, սուրը ձեռքիս բռնած:

Բ Ա Ջ Ի Լ Ի Դ:

Դո՞ւ:

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Այո՛, ես եւ ես բոլորը գիտէի, բոլո՛րը, դարչելի դու կլին: Ինձ յայտնի էր, որ Բրանկոմիրը դաւադրութեան էր ձեռնամուխ եղել, այնքան դու նրան եփեղ էիր յանցանքի մէջ. իսկ ես սպանեցի նրան, ես ինքս, ահա՛ այս ձեռքովս:

Բ Ա Ջ Ի Լ Ի Դ:

Դո՞ւ, նորա որդին...

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Այո՛, ես՝ հայրասպանս... եւ պատճառը այդ մարդասպանութեան, այդ զաղրելի գործի, միմիայն դու ես, դո՛ւ, դարչելի արարած... Իսկ ես, ո՛հ բաղդի անմիտ

կամայականութիւն, ես ստիպուած եմ լռել այդ մասին, որովհետեւ քո յանցանքդ եւ հանգուցեալինն է: Ճակատագիրը այդպէս է ցանկանում իր քմահաճոյքով, որ նրա յիշատակը յարկուած մնայ, իսկ դու անպատիժ... Վկաների առաջ ես չեմ կարող քեզ նշաւակել, ո՛հ խայտառակ կին... Բայց զոնէ այժմ այստեղ ես քեզ կարող եմ յայտնել, թէ որպիսի հրճուանքով ես քամուն տուի քո դժոխային երազներդ, եւ գիշերները պիղծ ձեռներովդ հիւսած նենդաւոր ցանցը խորտակելով, զո՛հ կորզեցի Այո՛, այդ ես խորտակեցի սոսկալի յոյսերդ... Եւ այժմ ցանկանում եմ, թշուառակա՛ն, միսեղ կրծքիդ մէջ մշտնաջենական խղճի խայթոցը, արիւնոտ ձեռներս դէպ քեզ մեկնելով, մարդասպանութեան քեզ էլ բաժին տալ... Վրէժ-խնդիր լինել թէ բնութիւնից եւ թէ խճճուած օրէնքից:

Բ Ա Ջ Ի Լ Ի Դ:

Զգուշացի՛ր:

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Ա՛հ, դու ցանկանում էիր թագաւորացնել եւ թագուհի՛ դառնալ... Այո՛, եւ այդ իմ չնորհիւ է, որ դու ոչինչ չը ստացար, լսո՞ւմ ես, այդ ես զրկեցի քեզ... Արդ զո՛հ եղիր ոչնչութիւնովդ եւ մնա՛ խայտառակութեան դարչելի ցեխում... Իսկ այժմ դէպ կոխի:

Բ Ա Ջ Ի Լ Ի Դ:

Սպասիր, ես վրէժս կառնեմ:

(Լսում է դուրսը աղմուկ: Բացվում է խորհի դուռը, որտեղից մտնում է քաղաւորը, սպիտակ զգեստի վրայից գրահ հագած, խոյրի վրայ քաղ ծածկած, աջ ձեռ-



քրս զէնք առած՝ կռուի դաշտն եմ դուրս եկել... Ի սէր քրիստոնէութեան եւ հայրենիքի, ես կամենում եմ, որ դու միշտ իմ կողքին դնուիս, պաշտպանես թէ ինձ եւ թէ սուրբ դրօշակը... Այժմ յուսով եմ, որ այսքանս էլ բաւ է նրանց անտեղի կասկածները փարատելու եւ նորից քեզ դարձնելու նրանց նախկին հաւատը... Գոհ եմ, որդեակս...

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

(Ընկնում է քաղաւորի ոտները եւ ձեռները հաւքուրում): Ո՛հ իմ բարի՝ եւ սո՛ւրբ թագաւոր...

Թ Ա Գ Ա Ի Ո Ր:

Զինուորնե՛ր, լաւ լսէք եւ ուշք դարձրէք ասածներին: Դժբաղդութիւնը հետեւում է ձեզ: Պէտք է նախ ապացուցանել, ապա թէ դատապարտել: Վերադարձէք դէպ ձեր արժանաւոր առաջնորդը...

Բ Ա Զ Ի Լ Ի Դ:

Իսկ ես դատապարտում եմ եւ կապացուցանեմ, որ նա յանցաւոր է...

Թ Ա Գ Ա Ի Ո Ր:

Դո՛ւք, իշխանուհի՛...

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

(Մի կողմ) Աստուած իմ...

Բ Ա Զ Ի Լ Ի Դ:

Վեհափառ տէր, ապացոյց էք կամենում դուք... Շատ զեղեցիկ: Ես, Բագիրիդս՝ Միքայէլի այրին, այն հե-

րոսի այրին, որի կորուստը ողբում են ամենքը, ես հաստատում եմ, որ սրանց ասածները ճիշտ է, եւ ապացոյցը, որ պահանջում էք, ահաւա՛սիկ: (Տաղիս է քաղաւորին փրմանը) Կարգացէ՛ք...

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

(Մի կողմ) Սարսափելի՛ է:

Թ Ա Գ Ա Ի Ո Ր:

(Ակնարկ զցելով մագաղաթին) Ֆիրման... որ թագ է խոստանում, եթէ տաճիկները կանցնեն լեռները առանց պատերազմի... Ո՛հ, ամենակալ տէ՛ր... Այս ի՞նչ եմ տեսնում—Բրանկովրի՛ կնիքը...

Ա Մ Բ Ո Խ Ը:

Ա՛հ...

Բ Ա Զ Ի Լ Ի Դ:

Եւ այդ չարագործը կամենում էր ինձ մեղսակից դարձնել: Ես, ազատելով հայրենիքը, նրան ձեր դատաստանին եմ յանձնում...

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Գարշելի՛...

Բ Ա Զ Ի Լ Ի Դ:

Իսկ ես վերադառնում եմ իմ մշտնջենական սգուրութեանը: (Մի կողմ): Վերջապէս վրէժս լուծեցի: (Դուրս է գնում):

Ա Մ Բ Ո Խ Ը:

(Զայրացած) Ա՛հ...

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ի Ն:

(Մի կողմ): Այս բոլորը դու տեսնում ես, եւ թո՞ղ ես տալիս, ով արդարադատ Աստուած: Ո՛հ, ինչ ծանր է քո բարկութիւնը... ես անկարող եմ ազատուել չը դատաւարտելով հօրս...

Թ Ա Գ Ա Ի Ո Ր:

Դու չե՞ս կամենում արդարանալ...

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ի Ն:

(Մի կողմ) Ի՜նչ արդարանա՛լ... իսկ ի՞նչ կերպ:

Թ Ա Գ Ա Ի Ո Ր:

Խօսի՛ր, արդարացրու քեզ այս խայտառակ յանցանքից... ապացուցիր քո անմեղութիւնը... անմոռութիւն է լռութիւնդ...

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ի Ն:

(Մի կողմ): Հայր, անունդ ես չեմ արատաւորիլ... կը թագցնեմ քո դաւաճանութիւնը եւ իմ հայրասպանութիւնը... Ես մահ էի վնասում, ահաւասիկ այն, այդ էր իմ ուղածը...

Թ Ա Գ Ա Ի Ո Ր:

Վերջին անգամ հարցնում եմ՝ դու ոչինչ չե՞ս պատասխանում:

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ի Ն:

Ոչինչ:

Ա Մ Բ Ո Խ Ը:

Մահ դաւաճանին, մահ:

Թ Ա Գ Ա Ի Ո Ր:

(Զեռֆով՝ անկողնի նրանց) Դատաստանը կը լինի, եւ շուտով նրան զլխատման կենթարկենք, որովհետեւ սրա յանցանքը նոյնն է, ինչ Յուդան դորձեց: Բռնէ՛ք դորան:

(Մի քանի զինուորներ շրջապատում են նորան): Իսկ մենք, զաւակներս, միացած խորհենք թշնամուց վրէժ առնելու արբազան պատերազմի մասին: Այժմ ձեզ կառաջնորդէ ձերմական զլխով մի ծերունի քահանայ, այլեւ դարդ, սակայն լի հաւատով: Աստուած ինքը նրա ուղեցոյցը կը լինի տաճիկների դէմ... Դէպ պատերազմ, հաւատացեալ զինուորներ...

Ա Մ Բ Ո Խ Ը:

(Ոգեւորում): Կեցցէ՛ թագաւորը, (Թագաւորը դուրս է գնում շրջապատած ամբոխով):

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ի Ն:

(Մի կողմ, մինչ սրա քեւերը կաշկանդում են): Ո՛հ Տէր, հոգուս տանջանքներին վերջ տալու համար, ես մահ էի խնդրում Քեզանից, ամենասուկալի՜ն անգամ... Դու համաձայնեցիր, սակայն ընտրելով ամենաստորը — զրպարտութիւնը... ես կը կոնարհեմ (նայելով շուրջը): Ոչ ինչ բայց սոսկալի՛ է բոլորի երեսից ընկնել (Միջիցան, որ մինչ այդ ժամանակ ամբոխի միջին ներկայ էր, մօտեցնում է եւ ընկնում կարսնաւորի ոտները):

Մ Ի Լ Ի Յ Ա:

Տէր իմ, ես այստեղ եմ...

Վարագոյր:

Ա Մ Բ Ո Խ Ը:

Յաղթութիւն...

Լ Ա Զ Ա Ր:

Եւ այդ փառաւոր յաղթութիւնը մենք պարտական ենք արեղարդ ծերունի քահանային... Դարէ դար այդ կը յիշեն երգիչները, այդ խոյր ծածկած արքային...

Ո Ի Ր Օ Շ:

Ո՛հ, եթէ դուք տեսնէիք, թէ ինչպէ՛ս էր նա զրա-հաւորուած իր սպիտակ ձիու վրայ նստած...

Լ Ա Զ Ա Ր:

Արեւը ծագելուց մինչ մայր մտնելը, ամեն տեղ նա ներկայ էր, ոգեւորում էր մահառիթ կռուի մէջ մտած եւ շարունակ աղօթում:

Ո Ի Ր Օ Շ:

Հէնց երեւում էր նա թէ չէ, թշնամին փախուստ էր տալիս:

Լ Ա Զ Ա Ր:

Օթարգիւլ փաշան անձնասպան եղաւ... Տաճիկները կարգը կորցրած, իրար անցած սկսան փախչել, ղէնքերը թափելով ճանապարհին իսկ նրանց մեծ մասը կամուրջից անցնելիս իրար հրելով ջուրը թափուեցին:

Ո Ի Ր Օ Շ:

(Դառնալով Բրակիօմիրի արձանին): Իսկ դո՛ւ, մետաղեայ մարդ, բաւական ե՞ս, պատասխանի՛ր... Տա-

## ՀԻՆԳԵՐՈՐԴ ԳՈՐԾՈՂՈՒԹԻՒՆ

Մի հրապարակ Վեդդիկնուն, մեջեղ, փոքր ինչ ձախ, ձիու վրայ նստած Միխայիլ Բրակիօմիրի արձանը, դեպ աջ երկաթապատ դռներով քանի մուտք մի քանի ասիականներով. խորքում քիզակնակալ անշարժ մայր եկեղեցին. աջ եւ ձախ կողմերից փողոցներ: Արեւը մայր է մտնում:

ՏԵՍԱՐԱՆ ԱՌԱՋԻՆ

Միլիցա, Ուրօշ, Լազար, Աննա եւ ամբոխը: Վա-րագոյրը բացուելիս Ուրօշը եւ Լազարը զինաւորուած կանգնած են. ամբոխը շրջապատում է նրանց: Գունաս-նուած Միլիցան կուչ եկել կպել է քանի պարսպից: Բանի մուտքը հսկում են երկու զինուորներ:

Ա Մ Բ Ո Խ Ը:

Կեցցէ՛, կեցցէ՛ թագաւորը, կեցցէ՛ սրբազանը:

Ո Ի Ր Օ Շ:

Կեցցէ՛ սլաւօն ցեղը, կեցցէ՛ յունական խաչը, մեր սիրած, պաշտած հայրենիքը, որ աղատուած է: Անիծեալ Օսմանլիին վռնգուեց մեր լեռներից: Ալեւոր Բալկանները եւ մեր սեւ լեռները մեզ պաշտպանում են միշտ... Թըշ-նամին յաղթուեց:

ճիկների արեան սուր հոտը պէտք է որ հաճելի լինի քո հոտոտելիքիդ, ծերուկ Բրանկօմիր...

Լ Ա Զ Ա Ր:

Քսան թնդանօթ, նրանց պատերազմական ամբողջ միջերբը, բազմաթիւ դրօշակներ աւար է մնացել: Սպանուած են երեք փաշա, վեց բէգ, իսկ մնացեալ տասն ճիկները սարսափից զլուխները կորցրած՝ մինչ Մեքքա կը համենն:

Ո Ի Ր Օ Շ:

Կեցցէ՛ մեր ծերունի արքան:

Ա Ն Ն Ա:

(Ուրօշին) Շո՛ւտ կը դայ նա:

Ո Ի Ր Օ Շ:

Գիշերը վրայ չը հասած:

Ա Ն Ն Ա:

Ինչ բաղդաւորութիւն:

Ո Ի Ր Օ Շ:

Շուտով նա այստեղ կերեւայ:

Լ Ա Զ Ա Ր:

Պէտք է այդ դաւաճան Կոստանդինին դատեն... Ո՛հ, ինչո՞ւ ես չեմ գահիճը, որ խաչեմ նրան...

Ա Ն Ն Ա:

(Յոյց տալով դէպ քանիք) Կամա՛ց... Այդ բանտումն է նա...

Լ Ա Զ Ա Ր:

Ինչո՞ւ կամաց... Նա այնտե՞ղ է... Ես էլ հէնց ուզում եմ, որ այդ լիբբը լսէ ինձ... Գիթա՞լ նորան...

Ա Ն Ն Ա:

(Յոյց ե տալիս Միլիցային): Ո՛հ... Գոնէ այդ ողորմելի կնո՛ջը խղճա՛ր...

Լ Ա Զ Ա Ր:

(Ճանաչեղով Միլիցային): Նա՛:

Ա Ն Ն Ա:

Բոլորի երեսից ընկած այդ անիծեալում նրա կանացի ընագդումը դժբաղդութիւն է ողբում: Հայրենիքից եւ հաւատից զուրկ այդ գնչու աղջիկը տանջվում է, տեսնելով իր սիրած, դժբաղդ մարդու տանջանքը: Նա չի հասկանում, որքան ստոր է այդ մարդու դաւաճանութիւնը: Երեք օր է ինչ նա այդ բանտումն է, եւ այդ աղջիկը, ինչպէս տեսնում ես այժմ, երեք օրից ի վեր շարունակ օր ու գիշեր կիսամեռ կպած է այդ պատից... Ինձ ցաւեցնում է նրա վիշտը:

Լ Ա Զ Ա Ր:

Է՛հ, իսկ ինձ ի՞նչ:

Ո Ի Ր Օ Շ:

(Վազեղով ուրախ ձայնով): Թագաւոր՛ը, թագաւորը գալիս է:

Ա Մ Բ Ո Խ Ը:

Կեցցէ՛ թագաւորը: (Լսվում է փողերի ձայնը):



U t U n U 3:

(Պահապաններին, ցոյց տալով Միլիցային): Տղերք,  
ճանապարհ բաց արէք: (Միլիցային): Ե՛յ կին, կորիր,  
հեռացիր այստեղից, խելացնո՛ւր է, ինչէ: (Հրուս եւ Մի-  
լիցային):

U t l t 8 U:

Ո՛հ, նա՛ պսպլիսի մի գրութեան մէջ: (Նրան հրե-  
շով դիպ անթոխ եւ լշոււ, ուր անհետանում է:)

## ՏԵՍԱՐԱՆ ԵՐՐՈՐԴ

Նրանք եւ Կոստանդին, առանց Միլիցայի:

Þ U G U t N R:

Կոստանդին Բրանկովիւր, ճանաչող էս սորան: (Յոյց  
է տալիս արձանը):

ህ ሰ ሀ ል ሄ ለ ሰ ህ:

$$(U \mid \ln \eta \eta^{\dagger}) : U \mid \mu :$$

ፆ ሂ ዓ ሄ ኮ በ ሶ፡

Ամբողջ տասն եւ երկու տարի կռիւ մղելուց յետոյ, նա մեռաւ հայրենի երկիրը պաշտպանելով, նրա աղա-տութեանը զոհուելով: Թշնամուց խլած թնդանօթներէից, երախտագիտութեամբ նրա վնէ գործերին անմահ յիշա-տակ, այդ մահարձանը ձուլեցինք: Ահաւասի՛կ... Թշուա-ռական, կարո՞ղ ես զու նայել նրան, դու, Միքայէլի որ-

զին, որ աշխարհը եկար նրան յաճորդելու, նրա փառա-  
ւոր անունը ժառանգելու, քեզ մեղադրում են ստոր դա-  
ւաճանութեան մէջ, եւ սպացոյցը, աւա՛ղ, անհերքելի է։  
Դու կամենում էիր վաճառել այն Բալկանները, որոնց  
չատ անգամ ազատեց հայրը... Ինչպէս քահանայ, ես գի-  
տեմ, թէ որքան խորասուզուած է մարդկութիւնը մեղ-  
քերի մէջ, իսկ նա, որ դաւաճանում է իր հայրենիքը,  
որ վաճառում է այն հողը, ուր հանգչում են իր սպաները,  
նա ամենավատթար յանցաւորն է... Յուդա են կոչում  
այդպիսի յանցաւորին։ Այն գեղեցկադէմ մօր զաւակին է  
նման նա, որ չուկան է դուրս բերում իր գեղեցիկ մօրը  
ինչպէս ստրուկ ծախելու։ Իսկ այդպիսի յանցանքը ոչ  
անուն ունէ, ոչ էլ արդարացում։ Քեզ մեղադրում են  
այդ տեսակ մի յանցանքի մէջ, Կոստանդին Բրանկօմիրիդ,  
իսկ դու մինչեւ անգամ արքայիդ ոտները ընկած, մեղա  
էլ չես գալիս, թողութիւն խնդրում։ Գոնէ խօսի՛ր, պար-  
զէ՛, դատաւորներիդ գիրութիւն տուր... Նայիր հօրդ  
արձանը, իր վեհապանծ գիրքով, այդ պահանջում է նրա  
վրդովուած ուրուականը, Կոստանդին, կամենում է քեզ-  
նից բոլոր իսկութիւնը տեղեկանալ... Դու ցեխը կոխե-  
ցիր հօրդ փառքով ծածկուած մահարձանը... Գոնէ ար-  
տասուքովդ լուա՛ այն, մաքրիր, նա քեզ խնդրում է  
արքայիդ հետ միասին։

4 0 0 8 5 6 7 8:

(Մի կողմ)։ Ո՛հ, կարծրացիր, սիրտ իմ, ինչպես այդ մետաղբ, եւ դու, իմ բերան, պապանձութիւն յաւիտենական լռութիւնով... Հայր իմ, մինչեւ վերջ կը տանեմ ես իմ ծանր խաչս եւ երկրորդ անգամ հայրասպան չեմ լինիլ... Իմ միակ խօսքը կոչնչացնէ քո ասպրող փառքդ. բայց ես կը լռեմ, ինչպէս մահարձանդ...

Թ Ա Գ Ա Ի Ո Ր :

Դու չե՞ս կամենում խօսել. լաւ էս կը գնամ ծե-  
րակոյտը, որ պէտք է չուտով վերջացնէ ատենանը, որո-  
նել քեզ համար յանցանքիդ վայել մի մահ. իսկ դու առ-  
այժմ մնա այստեղ, հօրդ փառաւոր արձանի մօտին, եւ  
թո՛ղ որ այդ հերոսի մեծ անունը քեզ ճնշէ իր ծանրու-  
թեան ներքոյ: (Թագաւորը դուրս ե գնում շրջապատու-  
ած իր շխիւքով, պահապանները ակոյսիս իջնում են  
դէպ կոխի փողոցները, ակցիները պահպանելով: Արձա-  
նի մօտ մնում ե միայնակ Կոստանդինը):

ՏԵՍԱՐԱՆ ԶՈՐՐՈՐԴ

Կոստանդին միայնակ, դառնալով արձանին:

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Գ Ի Ի Ն:

Փառաւոր արձան, հրճուէ՛, տեսնելով, թէ ի՞նչ հե-  
տեւանք ունեցաւ քո խայտառակ ոճիրդ. եւ ես պէտք է  
այդ քաւեմ, ես, քո անմեղ որդիդ: Ասա՛, ըստ ար-  
ժանոյն պատժո՞ւած եմ արդեօք թափածա արեան փո-  
խարէն... Համեմատիր մեր երկուսիս վիճակը, հայր իմ, քո  
անսահման փառքը եւ իմ անարդար ամօթը... Դու լու-  
տանք վաստակեցի՛ր, իսկ ես պէտք է ծածկեմ այն: Քո  
դատաւորդ ինքը դատապարտուեց, իսկ դահիճդ պէտք է  
մեռնի: Մեղանով արդարութիւնը կրկնակի է անպատու-  
ած: Գոհ ե՞ս, հօրս ուրուական... յագեցա՞ւ արդեօք  
վրէժինդրութիւնդ... Շուտով ինձ կը մեռցնեն, որ ուրա-  
խութիւն պատճառեն սատանային: Ո՛հ, հանգստացի՛ր,  
սիրտ իմ, զսպի՛ր ալ տունջդ, թո՛ղ որ ես զոհուեմ, զո-

հիս քաւութեան... Ես պէտք է որ սպանէի, այլ կերպ  
անկարող էի... Բայց ես հօրս սպանեցի, եւ ես պէտք է  
որ քաւեմ, ինձ փրկութիւն չը կայ... Մենք երկուսս էլ  
միատեղ դաւաճանեցինք—նա հայրենիքին, իսկ ես—նոյն  
իսկ իրան ընութեան—խլելով այն կեանքը, առանց որին  
ես աշխարհ չէի դալ... Այժմ ինձ զոհում եմ պատիւդ  
ազատելու, ուրեմն սարտազանց չեմ մնում, ես քաւեցի  
արդէն արիւնովդ լուանալով քո յանցանքդ, իսկ փառքդ  
իմ արիւնովս: Այժմ թող դահճի ծանր սուրը իջնէ չուտ  
գլխիս, որ քո լուտանքը յաւիտեան ինձ հետ գերեզման  
տանեմ, իսկ թափուածա արիւնով լուանամ այդ մահար-  
ձանը... Առանց կասկածելու այլեւս, ով արիւնալից ան-  
ցեալ, որ վարագործում ես նրան, նա իրաւունք կունե-  
նայ ճակատը համարձակ դէպ վեր բարձրացնելու...

ՏԵՍԱՐԱՆ ՀԻՆԳՆԵՐՈՐԴ

Կոստանդին, Թագաւոր, Ուրօշ, Լազար, Աննա, ամբոխը,  
ապա Միլիցա:

Ո Ի Ր Յ Շ:

(Բեւի խորհից): Թագաւորը գալիս է: (Ամբոխը շր-  
ջապատում ե բեւի):

Լ Ա Զ Ա Ր:

(Ամբոխի միջից, Ուրօշին): Եկ այստեղ չուտ տեղ  
բռնենք: Վերջապէս մենք չուտով դատաւճիռը կիմա-  
նանք: Եւ կը տեսնենք, ինչպէս հոսում է նրա արիւնը:

Ո Ւ Ր Օ Շ:

Ինչպէս է գլխաւորում (Երեւում ե քաղաւորը իր շփախմբով):

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Ես քեզ սպասում եմ, ո՛վ ցանկալի մահ... պատ-  
րաստ է հոգիւ: Քո մխիթարիչ թեւերի վրայ ես հան-  
գիստ կը գտնեմ, անդորր նիրհով... Շնորհակալ եմ քեզ-  
նից, ո՛վ իմ ցանկալի մահ, բիւր անգամ շնորհակալ...

Թ Ա Գ Ա Ի Ո Ր:

Կոստանդին Բրանկովիւր, իշխանազների ծերակոյտը  
այսօր միաձայն վճռեց, որ դու յանցաւոր ես: Սարսա-  
փելի՛ է. դեռ եւս չը լսուած մի վճիռ: Մենք գտանք,  
որ մահուան պատիժը այն դաւաճանի համար, որ վաճա-  
ռում է հայրենիքը, շատ թեթեւ պատիժ է, չնայն քաւու-  
թիւն: Դու կապրես...

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

(Մի կողմ): Ի՜նչ է ասում: (Տրտունջ անքոխի մեջ):

Լ Ա Զ Ա Ր:

Ո՛հ, ո՛հ, պէտք է գլխատել...

Ո Ւ Ր Օ Շ:

Մենք նրա արիւնն ենք պահանջում...

Լ Ա Զ Ա Ր:

Մենք նրա մահն ենք ցանկանում:

Ա Մ Բ Ո Խ Ը:

Մահ, մահ...

Թ Ա Գ Ա Ի Ո Ր:

Լոռիթիւն... Նա պէ՛տք է ապրէ՛, սակայն այդ  
կեանքը աւելի սարսափելի է, քան մահը... Նա կը շըղ-  
թայուի մինչ ի մահ հօր մահարձանի պատուանդանից, եւ  
կապրէ խայտառակ կերպով, երբ եւ իցէ ազատուելուց  
յոյսը բոլորովին կտրած... Ձեզանից ամեն մէկը կարող է  
թքել նրա գարշելի դէմքին, մօտից անցնելիս ցելս նե-  
տել վրան, իսկ սպանել, նրա արիւնը թափել ոչ ոք  
իրաւունք չունէ, որովհետեւ նա դատապարտուած է ապ-  
րել այդ խայտառակութեան մէջ:

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Ո՛հ, Տէ՛ր Աստուած...

Թ Ա Գ Ա Ի Ո Ր:

Ժողովուրդը գո՞հ է մեր դատավճռից, բաւականու-  
թիւն է ստացել նրա վրէժը...

Ա Մ Բ Ո Խ Ը:

Այո՛, տէր արքա՛յ...

Լ Ա Զ Ա Ր:

Թող ապրի, որ տանջուի չարունակ:

Ո Ւ Ր Օ Շ:

Շատ արդար դատաստան է:

Ա Ն Ն Ա:

Խեղճ... Ի՞նչ խիստ պատիժ է... աւելի սարսափելի է այդ, քան կախաղանի պարանը եւ կամ դահճի կացինը...

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Ապրել այս կե՛րպ... դարձեա՛լ տանջուել, ո՛հ, տէր Աստուա՛ծ...

Թ Ա Գ Ա Ի Ո Ր:

Շղթայէ՛ք ընդ միշտ նրան (Զինուորները բռնուռ են շղթայում նրան, մահաւճակի պատռանդակից): Դաւաճանի խայտառակ կեանքի ձիգ տանջանքներին մահը կարող է միայն վերջ տալ:

Ո Ի Ր Օ Շ:

(Դուրս գալով անբռնից): Այո՛, թո՛ղ որ յաւիտեան տանջուի այդ լիբը անպիտանը, հօր մահարձանը նրա անարգ մահու սիւնն է...

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

(Մի կողմ): Հայր իմ, քո փոխարէն, ես քաւում եմ այստեղ:

Լ Ա Զ Ա Ր:

(Անբռնից դուրս գալով): Այսպէս կաշկանդուած այդ մահարձանից, թող օր ու գիշեր տանջուի չարագործը...

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

(Մի կողմ): Տէր Աստուած, տո՛ւր ինձ ոյժ, կարողութիւն, համբերութիւն տուր, որ կարողանամ մինչ ի վերջ բոլորը տանել:

Լ Ա Զ Ա Ր:

(Թագաւորին): Տէր արքայ, թոյլ տուէք, որ կըրծքիս զայրոյթը դուրս թափեմ... Այդ ձեր կամքն է, որ նա ապրի, թո՛ղ որ ապրի: Մենք այդ դարչելի գաղանի բառաչանքներով կը հրճուենք... Սակայն, ինչպէս այսօր, նաեւ ամեն օր, իւրաւունք տուէք, որ իւրաքանչիւրս, երբ էլ զայրոյթը տեղ չի տալ մեր կրծքում, դնանք նրա առաջը կանգնենք, հայհոյենք, թքենք, անիծենք նորան, այդ անամօթին:

Մ Ի Լ Ի Յ Ա:

(Անբռնից դուրս գալով, ընկնում է Կոստանդինի գիրկը): Դեռեւս կայ մէկը, որ նրան սիրում է եւ զըրկում նրան...

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Միլիցա՛...

Մ Ի Լ Ի Յ Ա:

(Անբռնից): Դէ՛հ, այժմ շտապէք ձեր լուտանքները, անդուժ դահիճներ, ձեր նախատինքը գոնէ մենք երկուսով կը կրենք...

Լ Ա Զ Ա Ր:

Պէտք է հեռացնել նրա զրկից այդ կնոջը:

Թ Ա Գ Ա Ի Ո Ր:

Լսի՛ր: Ասա՛, թշուառ կին, դու չը գիտե՞ս, որ այդ մարդը այնպիսի մի քստմեկի ոճրագործ է, մի չա-

բազործ, որի արարքը անգամ սարսափ է բերում. իսկ դու  
ո՞վ ես եւ ինչո՞ւ այդպէս պաշտպանում նրան...

Մ Ի Լ Ի Յ Ա:

Ի՞նքը սէրը, կոյր ամբոխ, թո՛ղ քո ատելութեան  
ահարկու զայրոյթը, որչափ կուզէ, պարսաւէ նրան, սիրոյ  
դատաստանը աւելի արդար է, աւելի զօրեղ, քան ա-  
նարդար դատաստանի տուած վճիռը...

Լ Ա Ձ Ա Ր:

Պէտք է սպանել այդ կնոջ:

Թ Ա Գ Ա Ի Ո Ր:

(Զեռֆի նշանով կանգնեցնում է զրգոռած արքո-  
խին):

Մ Ի Լ Ի Յ Ա:

Այո՛, արինաժարաւ դու, անգութ ամբոխ, նրան  
հաւատարիմ է սէրը, որովհետեւ նա անմեղ է...

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

(Համբուրեցով նրա ճակատը): Ո՛հ, երջանիկ վայր-  
կեան, դեռ կայ մէկը, որ սիրում է ինձ:

Մ Ի Լ Ի Յ Ա:

Ա՛հ, դուք ուզում էք, որ նա ապրի, որպէս զի ա-  
ւելի՞ տանջուի, իսկ ես ձեզ այդ բաւականութիւնից կը  
զրկեմ, կ'ազատեմ նրան...

Թ Ա Գ Ա Ի Ո Ր:

Ինչպէ՛ս...

Մ Ի Լ Ի Յ Ա:

(Հանեցով կրծքից դաշոյնը): Քո տուած դաշոյնն է,  
Կոստանդին (Խփում է նրան), Ահաւասի՛կ ես սիրում  
եմ քեզ...

Կ Ո Ս Տ Ա Ն Դ Ի Ն:

Վերջապէ՛ս... ես մեռնում եմ, ո՛հ, չնորհակալ եմ  
(Մեռնում է):

Ա Մ Բ Ո Խ Ը:

Ա՛...

Մ Ի Լ Ի Յ Ա:

Եթէ կայ մի երկինք, ես քեզ կը հետեւեմ այնտեղ,  
իմ սիրելի իշխա՛ն (Սպանում է իրան):

Լ Ա Ձ Ա Ր:

Ուրեմն յանցանքը խոյս տուեց պատժից:

Թ Ա Գ Ա Ի Ո Ր:

Գուցէ Աստուած միայնակ դատէ այս զոյգին. իսկ  
մենք աղօթենք եւ յարգենք մահը:

Վ Ե Ր Ձ:



Վ Ր Ի Պ Ա Կ Ն Ե Ր

|      |    |        | Տպած է.          | Պէտք է լինի.  |
|------|----|--------|------------------|---------------|
| Երես | 6  | տող 10 | վերելից Այս .    | Այն           |
| "    | 6  | " 16   | " ընկնէր .       | կ'ընկճէր      |
| "    | 7  | " 7    | " պանդերբէզը     | Սկանդերբէզը   |
| "    | 14 | " 12   | " Սա չը լինէր    | Նա չը լինէր   |
| "    | 14 | " 24   | " Թուրս եկանք    | դուրս եկանք   |
| "    | 21 | " 25   | " արին, սուր,    | արեան սուր    |
|      |    |        | հուրը            | հոտը          |
| "    | 25 | " 18   | " օրինակ .       | օրէնք         |
| "    | 40 | " 1    | " բարձրութիւնքը  | բարձունքը     |
| "    | 54 | " 1    | " նի զուր եաշխա- | ի զուր են աշ- |
|      |    |        | տում             | խատում        |
| "    | 54 | " 20   | " անդադար        | անարդար.      |
| "    | 55 | " 17   | " ուղղութեամբ    | ուղղամու-     |
|      |    |        |                  | թեամբ         |
| "    | 63 | " 8    | " բուն տեսանքը   | բուն տեսնաքը  |
| "    | 63 | " 17   | " Այդ .          | Այդ           |
| "    | 64 | " 9    | " հոռու չէ .     | հոռու է       |
| "    | 66 | " 14   | " Ուրսակայ       | աւազկայ       |
| "    | 75 | " 21   | " ամենահարթ      | ամենակարճ     |
| "    | 85 | " 8    | " ձեռքովը .      | ձիովը         |
| "    | 84 | " 21   | " միշտ .         | մի շատ        |



2107

2013

